



शहीदी शताब्दी पुस्तक प्रकाशना श्रृंखला- 2



ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਗੁਰ ਨਸੀ

ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਕੇ ਜੀਵਨ, ਪ੍ਰਚਾਰ ਯਾਤਰਾਏਂ, ਬਾਣੀ
ਔਰ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਸੇ ਸੰਬੰਧਿਤ 350 ਸ਼ਵਾਲ ਜਵਾਬ

ਡਾਂ. ਸਂਦੀਪ ਸਿੰਹ

ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਏਵਂ ਖੋਜ ਵਿਭਾਗ,
ਹਰਿਆਣਾ ਸਿਖ ਗੁਰੂਦਾਰਾ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਕਮੇਟੀ,
ਕੁਰੂਕਾਤ੍ਰ

शहीदी शताबादी पुस्तक प्रकाशना श्रृंखला-2

तेग बहादर गुर नमो

(श्री गुरु तेग बहादर जी के जीवन, प्रचार यात्राएँ, बाणी और
विचारधारा से संबंधित 350 सवाल जवाब)



डॉ. संदीप सिंह

पब्लिकेशन एवं खोज विभाग,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र

©

**Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra**

**Teg Bahadar Gur Namo
(Hindi)**

**Writer:
Dr. Sandeep Singh
In-charge
Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra**

**Typing Work
Satnam Singh**

ISBN 978-81-983083-3-7

Printer: Tejas Printer Patiala

First edition October 2025

**Published by Department of Publication & Research,
Haryana Sikh Gurdwara Management Committee,
Kurukshetra**

प्रवेशिका

विश्व के धार्मिक रहबरों में श्री गुरु तेग बहादर जी का एक विशेष स्थान है जिन्होंने अपने निज से ऊपर उठ कर धर्म और मानवता के उपकार के लिए अपनी शहादत दी। त्याग और वैराग के शाक्षात् स्वरूप गुरु साहिब जी का जीवन और बाणी सदैवकालीन रूप में मनुष्य के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष 2025 में समस्त संसार श्री गुरु तेग बहादर जी और उनके महान् गुरसिक्खों- भाई दयाला जी, भाई मती दास जी और भाई सती दास जी का 350वां शहीदी दिवस मनाया जा रहा है। हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी गुरु पातशाह के जीवन और शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत है। यह बहुत खुशी वाली बात है की हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' की ओर से इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'शहीदी शताब्दी पुस्तक प्रकाशन शृंखला' प्रारंभ की गई है। यह पुस्तक इस शृंखला की दूसरी पुस्तक है। पुस्तक को शोधपरक ढंग से तैयार करने के लिए पुस्तक के लेखक डॉ. संदीप सिंह बधाई के पात्र हैं। आशा है कि संगत इस पुस्तक से लाभ प्राप्त करेगी। मेरी गुरु साहिब के चरणों में अरदास है कि वह हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी को निरंतर सेवाएं करने के लिए हिम्मत और सामर्थ्य प्रदान करें-

तेग बहादर सिमरिअै घर नजु निधि आवै धाइ सभ थाई होइ सहाइ ॥

जथेदार जगदीश सिंह झींडा,
प्रधान,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र ।

संदेश

प्रगट भए गुर तेग बहादर । सगल सृष्टि पै ढापी चादर ।

कर्म-धर्म की जिनि पति राखी । अटल करी कलजुग मै साखी ।

धार्मिक अधिकारों के रक्षक, श्री गुरु तेग बहादर जी का जीवन और शहादत विश्व इतिहास का एक अनुपम अध्याय है। उनकी अद्वितीय शहादत ने न केवल धर्म की नींव को मजबूत किया, बल्कि समस्त विश्व को अपने अधिकारों, सच्चाई और न्याय के लिए लड़ने का जज्बा भी प्रदान किया। उन्होंने औरंगजेब के अत्याचारों से भयभीत लोगों को न केवल निर्भयता का पाठ पढ़ाया, बल्कि अपनी शहादत के माध्यम से इस अत्याचारी घटनाक्रम पर अंकुश भी लगाया। ऐसे महान परोपकारी गुरु पातशाह तथा तीन महान गुरसिक्खों- भाई दयाला जी, भाई मती दास जी तथा भाई सती दास जी की 350वीं शहीदी वर्षगांठ के अवसर पर हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' द्वारा पुस्तक प्रकाशित करना एक प्रसंसनीय पहल है। इस पुस्तक में श्री गुरु तेग बहादर जी के जीवन, यात्रा, शहादत और बाणी से संबंधित 350 प्रश्न-उत्तर शामिल किए गए हैं। मैं इस कार्य के लिए डॉ. संदीप सिंह और समस्त टीम को बधाई देते हुए गुरु साहिब से अरदास करता हूं कि वह हम सभी को गुरसिक्खी मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान करें।

स. जसविंदर सिंह दीनपुर,
मुख्य सचिव,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र।

भूमिका

सिक्ख धर्म के नौवें पातशाह, श्री गुरु तेग बहादर जी ‘धर्म रक्षक मसीहा’ के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की रक्षा के लिए अपनी अद्वितीय शहादत दी। श्री गुरु तेग बहादर जी ‘भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन’ का साकार स्वरूप थे जिन्होंने भयभीत लोगों को निर्भयता का संदेश प्रदान किया। हिंदू धर्म में उन्हें ‘हिन्द की चादर’ कहकर सम्मान प्रदान किया जाता है क्योंकि गुरु साहिब ने कश्मीरी पंडितों की फरियाद सुनकर औरंगजेब द्वारा हिंदुओं पर किए जा रहे अत्याचारों को अपनी शांतिपूर्ण शहादत के माध्यम से रोकने का ऐतिहासिक कार्य किया। श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत इतिहास का एक अद्भुत घटनाक्रम है जिसको श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने ‘कीनो बडो कलू महि साका’ कहकर सम्मान प्रदान किया। यह शहादत अपने निज से ऊपर उठकर दर पर आए मजलूमों के धर्म की रक्षा के लिए दी गई एक अद्वितीय शहादत है। ‘गुर सोभा’ नामक स्त्रोत ग्रंथ में कवि सेनापति ने श्री गुरु तेग बहादर जी को संपूर्ण सृष्टि की चादर कहकर संबोधित किया है जिनकी शहादत ने संपूर्ण सृष्टि की इज्जत और गौरव को बनाए रखा:

प्रगट भए गुर तेग बहादर। सगल सृष्टि पै ढापी चादर।

वर्ष 2025 में समस्त जगत, श्री गुरु तेग बहादर जी और उनके साथ शहीद होने वाले भाई दयाला जी, भाई मती दास जी और भाई सती दास जी की 350वां शहीदी दिवस मनाते हुए और उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहा है। मार्गशीर्ष महीने की शुक्ल पक्ष 5 (25 नवंबर, 2025) वाले दिन श्री गुरु तेग बहादर जी और इन महान गुरुसिक्खों की शहादत के 350 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर गुरु पातशाह को समर्पित अनेकों धार्मिक समारोह नियोजित किए गए हैं। 1975 ई. में श्री गुरु तेग बहादर जी का 300वें शहीदी दिवस तथा 2021 में उनके 400वें प्रकाश पर्व के बाद यह एक ऐसा ऐतिहासिक अवसर है जब समस्त गुरु नानक नाम लेवा संगत बड़े स्तर पर श्री गुरु तेग बहादर जी को अपने मन-मस्तिष्क का हिस्सा बनाकर नतमस्तक हो रही है।

हरियाणा प्रदेश की मुख्य पंथक संस्था, हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी की तरफ से शहीदी शताब्दी को समर्पित अनेकों कार्यक्रम नियोजित किए गए हैं। हरियाणा कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी की 350 वर्षीय शहीदी शताब्दी को समर्पित 'शहीदी शताब्दी पुस्तक प्रकाशन श्रृंखला' प्रारंभ की गई है जिसके तहत गुरु साहिब जी के जीवन, यात्राओं, बाणी और विचारधारा से संबंधित विभिन्न ऐतिहासिक और दार्शनिक पुस्तकों को प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा। यह पुस्तक इस श्रृंखला की दूसरी पुस्तक है, जो हिन्दी भाषा में तैयार की गई है। सिक्ख धर्म में आस्था रखने वाले ऐसे श्रद्धालु और अनुयायी, जो पंजाबी भाषा पढ़ने-लिखने में सक्षम नहीं हैं, उनकी श्रद्धा और सिक्ख धर्म के बारे में जानने की रुचि को ध्यान में रखते हुए हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के 'पब्लिकेशन एवं खोज विभाग' द्वारा हिन्दी भाषा में यह पहली पुस्तक तैयार की गई है। हिन्दी भाषा वाली यह पुस्तक मेरे जीवन का हिन्दी भाषा वाला पहला अकादमिक कार्य है क्योंकि मैने अपने स्कूल-कॉलेज स्तर की पढ़ाई और पीएच.डी. का शोध कार्य पंजाबी माध्यम में किया है। अब तक की मेरी सभी पुस्तकें और शोध पत्र भी पंजाबी भाषा में प्रकाशित हुए हैं। इसलिए हिन्दी भाषा में कार्य करना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल जरुर रहा क्योंकि पंजाबी और हिन्दी भाषा के अनेकों शब्दों और व्याकरणिक रूप में बहुत विभिन्नता है। पंजाबी पुस्तकों के कार्य की तरह गुरु पातशाह जी की कृपा से हिन्दी भाषा वाली इस पुस्तक का कार्य भी पूरा हुआ है। इस कार्य में हम कितना सफल हुए हैं, यह पुस्तक के पाठक ही बता सकते हैं।

विषय-वस्तु के अनुसार पुस्तक को चार भागों में विभाजित किया गया है। पहले और दूसरे भाग में गुरु साहिब के जीवन, यात्रा, शहादत, बाणी और विचारधारा से संबंधित 350 प्रश्न-उत्तर हैं। तीसरे भाग में श्री गुरु तेग बहादर जी के जीवन से संबंधित प्रमुख स्थानों के चित्र तथा संक्षिप्त विवरण शामिल हैं। चौथे भाग में गुरु साहिब की बाणी में से कुछ चुनिंदा शब्द और सलोक (श्लोक) उनके अर्थ सहित शामिल किए गए हैं। पुस्तक की तैयारी में प्रयुक्त पुस्तकों की सहायक पुस्तक सूची, पुस्तक के अंत में दी गई है।

यह पुस्तक सिक्ख पंथ को भेंट करते हुए हम गुरु पातशाह की कृपा का पात्र बनकर स्वयं को धन्य महसूस कर रहे हैं। मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ कि इस पुस्तक की तैयारी के दौरान मुझे श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित लगभग 45-50 पुस्तकों का अध्ययन करने तथा गुरु पातशाह के जीवन और कार्यों से आध्यात्मिक तरंगें प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। इस पुस्तक में श्री गुरु तेग बहादर जी के जीवन, यात्रा, बाणी और विचारधारा से संबंधित 350 प्रश्न-उत्तर शामिल किए गए हैं। यह पुस्तक विशेष रूप से स्कूल-कॉलेज के छात्रों और उन पाठकों के लिए तैयार की गई है जो बड़े आकार के शोध पत्रों और पुस्तकों को पढ़ने में सहज महसूस नहीं करते। आशा है कि संक्षिप्त प्रश्नोत्तर पाठकों को रोचक और आसान तरीके से श्री गुरु तेग बहादर जी के बारे में विशिष्ट जानकारी प्रदान करेंगे। इस पुस्तक में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित केवल मुख्य गुरसिक्खों/व्यक्तियों और स्थानों को ही शामिल किया गया है क्योंकि पुस्तक की आकार सीमा के कारण समस्त गुरसिक्खों/व्यक्तियों और स्थानों का विवरण प्रदान करना संभव नहीं। इसलिए अनेकों विवरण इस पुस्तक में शामिल नहीं किए जा सके। पुस्तक में सम्मिलित ऐतिहासिक प्रश्न-उत्तर तैयार करते समय विभिन्न स्रोतों एवं पुस्तकों के अध्ययन से प्रामाणिक तथ्यों तक पहुंचने का प्रयास किया गया है, किन्तु इतिहास के कई पहलुओं में द्वंद्व होने के कारण ऐतिहासिक तथ्यों में विभिन्नता होना स्वाभाविक है।

श्री गुरु तेग बहादर जी की शहीदी शताब्दी को समर्पित इस पुस्तक के पूर्ण होने पर मैं अकाल पुरख के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनकी असीम कृपा से यह कार्य संभव हो पाया है। हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी के माननीय अध्यक्ष (प्रधान) जतथेदार जगदीश सिंह झीड़ा, मुख्य सचिव स. जसविंदर सिंह दीनपुर व सभी पदाधिकारियों का मैं तहे दिल से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर इस पुस्तक के लिए सहयोग प्रदान किया। पुस्तक की टाईपिंग का कार्य करने वाले स. सतनाम सिंह का धन्यवाद किए बिना शायद इस पुस्तक का कार्य अधूरा रहेगा। पुस्तक की छपाई का कार्य करने वाले तेजस प्रिंटर्स, पटियाला के हम शुक्रगुजार हैं जिन्होंने सीमित समय में इस पुस्तक की सुंदर छपाई का कार्य पूरा किया। आशा है कि

हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी और सिक्ख संगत का भविष्य में भी इसी प्रकार सहयोग प्राप्त होता रहेगा। पुस्तक में जाने अनजाने रूप से रह जाने वाली प्रूफ रीडिंग/टाइपिंग और अन्य त्रुटियों के लिए मैं गुरु रूप साध-संगत और समस्त पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। आशा है कि विद्वान/आकांक्षी/पाठक इस पुस्तक से लाभ प्राप्त करेंगे। गुरु पातशाह के चरणों में अरदास है कि वह इसी प्रकारमेहर भरा हाथ सिर पर रख कर अपनी सेवाएं लेते रहें।

डॉ. संदीप सिंह

इंचार्ज, पब्लिकेशन एवं खोज विभाग,
हरियाणा सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

विषय सूची

प्रवेशिका	3
संदेश	4
भूमिका	5-8
भाग पहला	
श्री गुरु तेग बहादर जी: जीवन, प्रचार यात्राएँ और शहादत	10-79
भाग दूसरा	
श्री गुरु तेग बहादर जी: बाणी और विचारधारा	80-97
भाग तीसरा	
श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित प्रमुख स्थानों की तस्वीरें	98-106
भाग चौथा	
श्री गुरु तेग बहादर जी की दिव्य गुरबाणी की एक संक्षिप्त रूहानी झलक	107-113
सहायक पुस्तक सूची	114-116

भाग पहला:

**श्री गुरु तेग बहादर जी: जीवन, प्रचार यात्रा और
शहादत**

1. श्री गुरु तेग बहादर जी के जीवन के संबंध में जानकारी प्रदान करने के मुख्य स्रोत कौन-कौन से हैं?
 - बचित्तर नाटक (श्री दशम ग्रंथ साहिब में से), श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा सिक्ख संगत को भेजे गए विभिन्न हुक्मनामे, बंसावलीनामा दसां पातशाहीयां का, महिमा प्रकाश, श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, श्री गुर कथा (भाई जैता जी), श्री गुर पंथ प्रकाश (रचनाकार रतन सिंह भंगू), पंथ प्रकाश (रचनाकार ज्ञानी ज्ञान सिंह), तवारीख गुरु खालसा, मालवा देश रटन दी साखी (साखी पोथी), भट्ट वहीयां, गुरु कीयां साखीयां आदि।
2. महाकवि भाई संतोख सिंह द्वारा रचित 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की किस राशि/ऋतु में श्री गुरु तेग बहादर जी का जीवन वृतांत प्राप्त होता है?
 - ग्यारहवीं और बारहवीं राशि में।
3. श्री गुरु तेग बहादर जी के प्रकाश (जन्म) और माता-पिता के बारे में जानकारी दें?
 - प्रकाश (जन्म)- वैशाख मास, कृष्ण पक्ष 5, संवत् 1678 विक्रमी (1 अप्रैल, 1621 ई.)
पिता- श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी, माता- माता नानकी जी।
4. गुर बिलास पातशाही-६ के अनुसार, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने श्री गुरु तेग बहादर जी के प्रकाश (जन्म) के बाद उन्हें देखकर कौन-से वचन (वाक्य) उच्चारण किए?

- गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बाल श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का मुख देख कर उन्हें नमस्कार की और वचन उच्चारण किए कि यह बालक दीन-दुखियों की रक्षा करेगा और सभी के संकट दूर करेगा ।
5. वर्तमान समय में श्री गुरु तेग बहादर जी के जन्म स्थान पर कौन-सा गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है?
- गुरुद्वारा गुरु के महल, श्री अमृतसर साहिब ।
6. श्री गुरु तेग बहादर जी के नानका स्थान (ननिहार) का नाम क्या है?
- बाबा बकाला, जिला अमृतसर (पंजाब) ।
7. शहीदों के सरताज पाँचवें पातशाह, श्री गुरु अर्जन देव जी सांसारिक रिश्ते में श्री गुरु तेग बहादर जी के क्या लगते थे?
- दादा जी।
8. श्री गुरु तेग बहादर जी के कितने भाई-बहन थे?
- चार भाई और एक बहन- बाबा गुरदित्ता जी (1613-1638 ई.), बीबी वीरो जी (बहन, जन्म 1615 ई.), बाबा सूरज मल्ल जी (1617-1645 ई.), बाबा अणी राय जी (जन्म 1618 ई.) और बाबा अटल राय जी (1619-1628 ई.)।
9. गुरु साहिब आयु पक्ष से अपने भाई-बहनों में कौन से स्थान पर थे?

- गुरु साहिब अपने भाई-बहनों में उम्र में सबसे छोटे थे और छठे स्थान पर थे।
10. गुरु साहिब का बचपन का नाम क्या था और यह नाम कैसे तब्दील हुआ?
- गुरु साहिब का बचपन का नाम बाबा त्याग मल्ल था। करतारपुर के युद्ध में गुरु साहिब की तेग (तलवार) चलाने की प्रतिभा देखकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने उनका नाम ‘तेग बहादर’ रखा।
11. श्री गुरु तेग बहादर जी ने किन-किन शिक्षियतों से शिक्षा प्राप्त की?
- गुरु साहिब जी की शिक्षा-दीक्षा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की देखरेख में हुई। गुरु साहिब जी ने बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई जेठा जी, भाई बिधी चंद, भाई अब्दुल्ला और भाई बाबक जी जैसे गुणी-विद्वानों से गुरमति, शस्त्र-शास्त्र और संगीत आदि की विद्या प्राप्त की।
12. श्री गुरु तेग बहादर जी का विवाह कब और किस के साथ हुआ?
- 15 अक्टूबर, 1689 विक्रमी (1632 ई.) करतारपुर निवासी भाई लाल चंद और बीबी बिशन कौर की सपुत्री माता गुजरी जी के साथ हुआ जिनका पिछला निवास 'लखनौर साहिब' नामक नगर (मौजूदा जिला अंबाला, हरियाणा) में था।
13. गुरु साहिब के विवाह की स्मृति में करतारपुर साहिब कौन सा गुरुद्वारा साहिब स्थित है?

- 'गुरुद्वारा विवाह स्थान' जो करतारपुर के माता गुजरी मोहल्ले (पुराना नाम रबाबीयां दा मोहल्ला) में स्थित है।
14. श्री गुरु तेग बहादर जी के कीरतपुर से बाबा बकाला आने का क्या कारण था?
- छठे पातशाह श्री गुरु हरिसोबिंद साहिब जी ने जोति-जोत समाने (विलीन होने) से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी, माता नानकी जी और माता गुजरी जी को बाबा बकाला जाकर निवास करने का आदेश दिया था। इसलिए गुरु साहिब ने कीरतपुर साहिब से आकर बाबा बकाला में अपना निवास किया।
15. श्री गुरु तेग बहादर जी ने बाबा बकाला में कितना समय निवास किया?
- सिक्ख परम्परा के अनुसार गुरु साहिब ने बाबा बकाला लगभग 20 वर्ष निवास किया। इस दौरान उन्होंने अकाल पुरख की बंदगी की और पूर्व की तरफ प्रचार यात्राएं करके सिक्ख धर्म का प्रचार भी किया।
16. बाबा बकाला निवास के दौरान श्री गुरु तेग बहादर जी का निवास स्थान किस जगह पर था?
- बाबा बकाला निवासी भाई मिहरा जी द्वारा छठे पातशाह के लिए श्रद्धा सहित बनाए गए नए घर में। भाई मिहरा जी ने छठे पातशाह को बिनती की थी कि वह उसके नए घर में अपना निवास करें। गुरु साहिब ने उसको वचन दिया था कि वह भविष्य में लंबा समय उसके घर में निवास करेंगे। भाई मिहरा के घर निवास करके श्री गुरु तेग बहादर जी ने छठे पातशाह के

भविष्यमुखी वचन और भाई मिहरा जी की इच्छा को पूरा किया था।

17. बाबा बकाला में गुरु साहिब के जीवन निर्वाह का क्या साधन था?
- गुरु साहिब को बाबा बकाला जाने का आदेश देने के पश्चात छठे गुरु साहिब ने जीवन निर्वाह के लिए श्री हरिगोबिंदपुर नगर के क्षेत्र को श्री गुरु तेग बहादर जी अधिकार में कर दिया था।
18. बाबा बकाला में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?
- तीन गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा दरबार साहिब, गुरुद्वारा मंजी साहिब और गुरुद्वारा श्री भोरा साहिब।
19. भट्ट वही भादसों के अनुसार श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब ने कब और किसको श्री गुरु तेग बहादर जी के लिए गुरियाई का तिलक दे कर बाबा बकाला भेजा?
- श्री गुरु हरिकृष्ण साहिब ने जोती-जोति समाने (विलीन होने) से पहले चेत्र मास, शूक्र ल पक्ष 14, संवत् 1721 विक्रमी (30 मार्च, 1664 ई.) वाले दिन अपनी माता सुलक्खनी जी के नेतृत्व में दीवान दरधा मल्ल, भाई चौपत राय, भाई जेठा, भाई मनीराम और भाई नानू को जत्थे के रूप में गुरियाई की रस्में पूरी करने के लिए बाबा बकाला भेजा।
20. सिक्ख परम्परा के अनुसार गुरु हरिकृष्ण जी ने जोती-जोति समाने से पहले

कौन-सा वचन किया था जिस में श्री गुरु तेग बहादर जी के गुरु होने संबंधी स्पष्ट संकेत थे?

- ‘बाबा बसहि जि ग्राम बकालो बनि गुर, संगति सकल समालो’ अर्थात्, अगले नौवें गुरु साहिब, जो संगत की संभाल करेंगे, ‘बकाला’ नगर में निवास करते हैं और रिश्ते में उनके बाबा (दादा) लगते हैं।
21. सिक्ख परम्परा के अनुसार बाबा बकाला में कितने व्यक्ति अपने गुरु का दावा करते हुए गद्दीयां लगा कर बैठे थे?
- सिक्ख परम्परा के अनुसार बाबा बकाला में 22 व्यक्ति अपने गुरु का दावा करते हुए गद्दीयां लगा कर बैठे थे। इनमें सबसे मुख्य धीर मल्ल था जिसके पास श्री गुरु अर्जन देव जी द्वारा लिखवाई गई आदि ग्रंथ साहिब की हस्तलिखित बीड़ (पोथी)- करतारपुरी बीड़ भी मौजूद थी।
22. श्री गुरु तेग बहादर जी गुरु रूप में किसने द्वारा और कैसे प्रगट हुए ?
- भाई मक्खन शाह लुबाणा द्वारा, जब वह अपनी अरदास पूरी होने पर सोने की मुहरों के रूप में अपनी भेंट गुरु नानक साहिब की गद्दी पर विराजमान गुरु साहिब को अर्पित करने आए थे।
23. उपर्युक्त घटना से संबंधित प्रचलित पंक्ति ‘गुरु लाधो रे’ का क्या अर्थ है?
- ये शब्द गुजरात क्षेत्र (वर्तमान पाकिस्तान) की भाषा से है जिसका अर्थ है- ‘गुरु मिल गया है’।

24. दिल्ली से गुरियाई का तिलक लेकर आने वाले जत्थे ने किस दिन बाबा बकाला पहुँच कर श्री गुरु तेग बहादर जी को व्यावहारिक रूप में गुरियाई प्रदान करने वाली रस्में निभाईं ?
- धीर मल्ल मास की अमावस्या, संवत् 1721 विक्रमी (11 अगस्त, 1664 ई.) को बाबा बुड़ा जी की चौथी पीढ़ी में से और बाबा झण्डा जी के सपुत्र भाई गुरदित्ता जी ने नौवें गुरु साहिब को प्रदान करने वाली रस्में निभाईं ।
25. गुरियाई मिलने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी पर किस ने गोली चलवाई ?
- धीर मल्ल ने गुरु साहिब से शारीरिक संकट पहुँचाने के लिए ईर्ष्या के अधीन होकर शीहें मसंद से गोली चलवाई गई जो गुरु जी के माथे को हल्का सा छू कर निकल गई ।
26. श्री गुरु तेग बहादर जी और धीर मल्ल के बीच क्या रिश्ता था ?
- धीर मल्ल, गुरु हरिगोबिंद साहिब के बड़े सपुत्र बाबा गुरदित्ता जी का बड़ा पुत्र था, जो रिश्ते में श्री गुरु तेग बहादर जी का भतीजा लगता था ।
27. सिक्ख स्त्रोत ग्रंथों के अनुसार, हमला करवाने वाले धीर मल्ल को श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-से शब्द बोले ?
- 'भले धीरमल भले जी, भले धीरमल धीरा' (अर्थात्, धीर मल्ल! तेरा भला हो।)

28. उपर्युक्त पंक्ति किस ग्रंथ में है?
- महाकवि भाई संतोख सिंह द्वारा रचित श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की राशि 11वीं के अंशु (अध्याय) 12 में।
29. श्री गुरु तेग बहादर जी पर हुए हमले के बाद भाई मक्खन शाह लुबाना द्वारा कौन-सी प्रतिक्रिया व्यक्त की गई?
- इस हमले के बाद भाई मक्खन शाह लुबाना और उनके साथियों ने धीर मल्ल के डेरे पर हमला करके शीहें मसंद और उसके साथियों को दंडित किया और उनके द्वारा गुरु साहिब के घर से लूटा गया सामान, धीर मल्ल के डेरे का सामान के सहित, उठाकर श्री गुरु तेग बहादर जी के पास ले आए।
30. क्या श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा यह सब सामान स्वीकृत किया गया?
- नहीं, जब त्यागी स्वभाव के मालिक गुरु साहिब को भाई मक्खन शाह लुबाना द्वारा की गई इस कार्रवाई का पता चला तो उन्होंने कोई भी सामान स्वीकार न करते हुए सारा सामान धीर मल्ल को वापस करने का आदेश किया।
31. इस सामान के साथ गुरु साहिब द्वारा धीर मल्ल को वापिस की गई आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ (हस्त लिखित पोथी) इस समय कहाँ मौजूद हैं?
- करतारपुर साहिब में धीर मल्ल के वंशजों के पास, जिसको करतारपुरी बीड़ कहा जाता है।

32. जिस स्थान पर आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ रख कर धीर मल्ल को इस बीड़ को ले जाने के संबंध में संदेश भेजा गया वहां कौन-सा गुरुद्वारा साहिब है?
- गुरुद्वारा अमानतसर साहिब, बाबा बकाला से लगभग 8 कि. मी. दूर।
33. गुरियाई मिलने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी कौन-से स्थानों से होते हुए श्री अमृतसर साहिब पहुंचे?
- गुरियाई मिलने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी सठियाला, रईआ, कालके आदि गांवों से होते हुए श्री अमृतसर साहिब पहुंचे।
34. उस समय श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर साहिब का प्रबंध किसके नियंत्रण में था?
- पृथी चंद के पौत्र और सोढ़ी मेहरबान के पुत्र सोढ़ी हरि जी के नियंत्रण में।
35. श्री गुरु तेग बहादर जी का श्री हरिमंदर साहिब पहुंचने पर वहां के मसंदों द्वारा किस प्रकार का व्यवहार किया गया?
- मसंदों द्वारा गुरु साहिब के श्री हरिमंदर साहिब पहुंचने की खबर सुनकर इस डर से श्री हरमंदिर साहिब की दर्शनी डयोढ़ी के दरवाजे बंद कर लिए गए कि श्री गुरु तेग बहादर जी श्री हरिमंदर साहिब पर कब्जा न कर लें।
36. जब भाई मक्खन शाह लुबाणा ने दर्शनी डयोढ़ी का दरवाजा बंद करने वाले मसंदों को धीर मल्ल की तरह दण्डित करने की अनुमति मांगी गई तो गुरु

साहिब ने क्या कहा?

- गुरु साहिब ने कहा कि इन मसंदों को दण्डित करने की जरूरत नहीं, क्योंकि यह तो पूजा का धान खा कर लालच से पहले ही मरे हुए हैं।
37. दर्शनी डयोढ़ी के दरवाजे बंद होने पर गुरु साहिब ने किस स्थान पर अपना आसन लगाया?
- गुरु साहिब ने श्री हरिमंदर साहिब को बाहर से ही माथा टेका (नमन किया) और परिकर्मा से बाहर श्री अकाल तख्त साहिब के पास एक बेरी के पेड़ के नीचे बैठ गए। इस स्थान पर अब 'गुरुद्वारा थड़ा साहिब' मौजूद है।
38. 'नहि मसंद तुम अमृतसरीये, तृष्णा अगन ते अंतर सड़ीये' यह गुरु साहिब ने यह वाक्य किसके लिए कहा?
- उन मसंदों के लिए जो उस समय श्री हरिमंदिर साहिब पर काबिज थे।
39. उपर्युक्त पंक्तियाँ किस ग्रंथ में हैं तथा इनके रचयिता कौन हैं?
- श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ की राशी 11वीं के अंशु (अध्याय) 22 में।
रचनाकार- महाकवि भाई संतोख सिंह।
40. वापसी के समय में, श्री अमृतसर साहिब के बाहर, जहाँ श्री गुरु तेग बहादर जी एक रात के लिए उसने अपना निवास किया था, वहां कौन-सा गुरुद्वारा स्थित है?

- गुरुद्वारा दमदमा साहिब, श्री अमृतसर साहिब से लगभग 5 कि. मी. ।
41. 'माईयाँ रब्ब रजाईयाँ' वाला वाक्य गुरु साहिब द्वारा किस माई (बृद्ध स्त्री) की सेवा से प्रसन्न होकर और किस स्थान पर उच्चारण किया गया?
- माई हरो जी की सेवा से प्रसन्न होकर 'वल्ला' नामक गांव में यह वचन किया गया।
42. वल्ला गांव में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित स्थान कौन-कौन से गुरुद्वारा साहिबान हैं?
- गुरुद्वारा कोठा साहिब और गुरुद्वारा वल्ला साहिब।
43. घुक्केवाली नामक गांव का श्री गुरु तेग बहादर जी से क्या संबंध है?
- गुरु अर्जन देव जी के चरण स्पर्श प्राप्त घुक्केवाली गांव में श्री गुरु तेग बहादर जी ने संगत की सुविधा के लिए एक कुआं और एक बाग लगवाया। वर्तमान समय में इस स्थान पर 'गुरुद्वारा गुरु का बाग' स्थित है।
44. खड्डूर साहिब से श्री गुरु तेग बहादर जी को आदर सहित गोइंदवाल साहिब लेकर जाने वाले व्यक्ति कौन थे?
- गुरु अमरदास जी के सपुत्र बाबा मोहरी जी के खानदान से बाबा द्वारका दास जी।

45. खेमकरन नामक स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी किसके अनुरोध पर पहुँचे?
- गुरु घर के श्रद्धालु चौधरी रघुपत राय निझर के अनुरोध पर जिसने वापसी के समय गुरु साहिब को एक अच्छी नस्ल की घोड़ी भेंट की ।
46. खेमकरण नामक स्थान पर गुरु साहिब जी किन जगहों से होते हुए पहुँचे?
- तरन तारन, खड़ूर साहिब और गोइंदवाल साहिब आदि जगहों से होते हुए ।
47. खेमकरण में गुरु साहिब की याद में कौन सा गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है?
- गुरुद्वारा गुरुसर साहिब ।
48. चोहला साहिब नगर में श्री गुरु तेग बहादर जी ने किस गुरसिक्ख के घर में निवास किया?
- भाई हीरा नामक एक बढ़ई सिक्ख के घर ।
49. चोहला साहिब से किस रास्ते से होते हुए गुरु साहिब जी साबो की तलवंडी पहुँचे?
- गोइंदवाल साहिब के पास से ब्यास नदी पार करके सुल्तानपुर होते हुए लक्खी जंगल के रास्ते से होकर ।

50. साबो की तलवंडी पहुंचने के बाद गुरु साहिब ने किस जगह पर अपना सबसे पहला पड़ाव किया?
- गुरु साहिब ने एक बामी (मिट्टी के टीले) के नीचे अपना पड़ाव डालकर धार्मिक दीवान सजाया और इस जगह के भारी अस्थान के रूप में प्रकट होने के भविष्यमुखी वचन किए। कालांतर के बाद यह स्थान सिक्ख धर्म के पांचवें तख्त- 'तख्त श्री दमदमा साहिब' के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
51. साबो की तलवंडी में श्री गुरु तेग बहादर जी के द्वारा तैयार करवाए गए सरोवर को क्या कहा जाता था?
- गुरुसर सरोवर।
52. भाई कान्ह सिंह नाभा के अनुसार, तलवंडी साबो में गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?
- 2 गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा मंजी साहिब और गुरुद्वारा गुरुसर साहिब।
53. कोट धरमू नामक नगर में श्री गुरु तेग बहादर जी के घोड़े चोरी करने आये चोरों के साथ क्या हुआ?
- इस करबे में रात को गुरु साहिब के घोड़े चुराने आए चोरों में से एक चोर ने, सिक्खों द्वारा पकड़े जाने के बाद पश्चाताप के कारण अपने आप को एक वृक्ष की शाखा को नुकीला कर के बनाई गई सूली पर चढ़ा कर खत्म कर लिया।

54. कोट धरमू में गुरु साहिब की याद में कौन सा गुरुद्वारा साहिब मौजूद हैं?

➤ गुरुद्वारा सुलीसर साहिब ।

55. बरे नामक गांव श्री गुरु तेग बहादर जी से किस प्रकार संबंधित हैं?

➤ इस गांव में पहुँचने पर गांववासियों ने गुरु साहिब की प्यार और सम्मान सहित सेवा की। गांव वासियों की बिनती मानकर गुरु साहिब ने यहाँ पर चौमासा (बरसात के चार महीने) व्यतीत किया। गुरु साहिब द्वारा इस गांव में बाजरा और मोठ आदि फसलें लगाने संबंधी आज्ञा मानकर गांववासियों ने फसल का झाड़ कम होने और इलाके में काल पड़ने की समस्या को दूर किया।

56. गोबिंदपुरा गाव में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कौन-सा गुरुद्वारा साहिब मौजूद हैं?

➤ गुरुद्वारा चरण कमाल साहिब, पातशाही नौरीं और दसर्वीं। इस गांव को दसर्वें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह का चरण स्पर्श भी प्राप्त है।

57. ‘गुरु कीयां साखीयां’ नामक स्रोत अनुसार ‘चक्क माता नानकी’ की स्थापना से पहले श्री गुरु तेग बहादर जी ने किस स्थान पर अपनी रिहाइश रख कर सिक्ख धर्म के प्रचार केंद्र के रूप में विकसित करने का फैसला किया?

➤ वर्तमान हरियाणा प्रांत में स्थित धमतान साहिब नामक स्थान को महिमा

प्रकाश ग्रंथ के अनुसार, इस स्थान पर सिक्ख संगत द्वारा गुरु साहिब के निवास के लिए एक सुंदर रिहाइश भी तैयार की गई ।

58. धमतान साहिब नामक स्थान पर गुरु साहिब किसके निमंत्रण पर पहुंचे थे?
- भाई दग्गो नामक एक मसंद (सिक्ख धर्म के प्रचारक) के निमंत्रण पर ।
59. श्री गुरु तेग बहादर जी कौन-से स्थानों से होते हुए धमतान साहिब पहुंचे?
- लैहरा-गागा, गुरने, लहिल कलां, मूनक, मकरौड़ साहिब आदि गांव में से होते हुए ।
60. धमतान साहिब नामक स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी की कौन-सी निशानी मौजूद है?
- श्री गुरु तेग बहादर जी की श्री साहिब (कृपाण) ।
61. श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा इस स्थान से बिलासपुर रियासत में जाने का क्या कारण था?
- गुरु तेग बहादर साहिब बिलासपुर के राजा दीप चंद (जो कि गुरु साहिब का श्रद्धालु था) के देहांत के बाद उसकी सत्रहवीं पर उसकी विधवा रानी चम्पा देवी को सांत्वना देने के लिए बिलासपुर रियासत में गए ।
62. श्री गुरु तेग बहादर जी ने बिलासपुर रियासत में किस नगर की स्थापना की

और इस नगर को आवाद करने का कौन-सा कारण बना?

- इस रियासत में गुरु साहिब ने चक्क माता नानकी नामक नगर की स्थापना की जो बाद में आनंदपुर साहिब के नाम से जाना गया। बिलासपुर के राजा दीप चंद की विधवा रानी चम्पा देवी के अनुरोध पर गुरु साहिब जी ने उसकी रियासत में नगर आवाद करके निवास करने का निर्णय लिया।
- 63. चक्क माता नानकी नगर के लिए गुरु साहिब द्वारा किस स्थान का चुनाव किया गया?
- चक्क माता नानकी नगर की स्थापना के लिए श्री गुरु तेग बहादर जी एक ऐसा स्थान चाहते थे जो सगे-संबंधियों की ईर्ष्या-द्वेष से दूर हो, प्राकर्तिक सुंदरता से भरा हुआ व पहाड़ियों से घिरा हो और युद्धनीति के पक्ष से सुरक्षित हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए गुरु साहिब ने तीन गाँव-लोधीपुर, मीयांपुर और सहोटा की संयुक्त (सांझी) भूमि 'माखोवाल के थेह (खंडहर)' का चुनाव किया।
- 64. श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा चक्क माता नानकी नगर स्थापित करने के लिए भूमि कितनी कीमत में खरीदी गई?
- सिक्ख परम्परा के अनुसार यह भूमि बिलासपुर रियासत से 500 रुपये में खरीदी गई।
- 65. चक्क माता नानकी नगर की आधारशिला कब और किसने रखी?

- इस नगर की आधारशिला 21 आषाढ़, संवत् 1722 विक्रमी (19 जून, 1665 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी ने बाबा बुड्ढा जी की चौथी पीढ़ी में से और बाबा झण्डा जी के सपुत्र भाई गुरदित्ता जी से रखवाई।
66. श्री गुरु तेग बहादर जी ने चक्क माता नानकी के निर्माण के समय इसके निर्माण पर संदेह करने वाले किस फकीर को सत्य का उपदेश दृढ़ करवाया?
- इस नगर के निर्माण के दौरान गुरु साहिब ने एक मुर्सिलम फकीर, सैयद मूसा (जो रोपड के पीर के रूप में प्रसिद्ध था) को यह उपदेश दृढ़ करवाया कि इमारतों का निर्माण मानवता के उपकार के लिए किया जा रहा है, न कि किसी भौतिकवादी इच्छा की पूर्ति के लिए।
67. श्री गुरु तेग बहादर जी ने प्रचार के लिए पूर्व की तरफ जाने से पहले आनंदपुर साहिब के निर्माण और रखरखाव का कार्य किन गुरसिक्खों को सौंपा?
- भाई भागू जी, भाई रामा जी, भाई साधु मुल्तानी जी और भाई देस राज जी आदि गुरसिक्खों को सौंपा।
68. श्री गुरु तेग बहादर जी की प्रचार यात्रा के लिए परिवार के साथ आनंदपुर साहिब से कब रवाना हुए?
- संवत् 1722 विक्रमी के आधिन मास में (अक्टूबर 1665 ई. में, वर्षा ऋतु का चौमासा काटने के बाद)।

69. आनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?
- चार गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा गुरु के महल, गुरुद्वारा भोरा साहिब गुरुद्वारा मंजी साहिब और गुरुद्वारा सीसगंज साहिब।
70. रोपड़ में श्री गुरु तेग बहादर जी की याद में कौन-सा गुरुद्वारा साहिब स्थापित है?
- गुरुद्वारा सदाव्रत साहिब।
71. दुग्गरी गांव में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कौन-सी परम्परा है?
- दुग्गरी गांव (जिला रोपड़) में खड़े एक बरगद के पेड़ के बारे में एक परम्परा है कि श्री गुरु तेग बहादर जी इस पेड़ के नीचे आकर बैठे थे। इस बरगद के नीचे इस समय एक थड़ा बना हुआ है और साथ ही 'गुरुद्वारा बोहड़ साहिब' की इमारत भी है। इस स्थान पर गुरु साहिब ने एक माता की बिनती स्वीकार करते हुए उसके बच्चे का सूखा रोग ठीक किया था।
72. श्री गुरु तेग बहादर जी ने कोटली के नवाब पर कौन-सी बरिष्ठाश की?
- कोटली का नवाब गुरु साहिब को बड़े सम्मान के साथ अपने महल में लेकर गया और उनकी अच्छे ढंग से सेवा की। गुरु साहिब के आशीर्वाद से नवाब के घर में एक लड़का पैदा हुआ।
73. घड्यां गाँव में किस गुरसिक्ख ने श्री गुरु तेग बहादर जी की सेवा की?
- बलराम नामक एक बढ़ई सिक्ख ने।

74. घड्यां गाँव में श्री गुरु तेग बहादर जी की याद में कौन-सा गुरुद्वारा साहिब मौजूद है?
- गुरुद्वारा श्री अकालगड़ साहिब, पातशाही नौरीं।
75. कौन-से गाँव को बाढ़ से बचाने के लिए श्री गुरु तेग बहादर जी ने बांध बनवाया और मिट्टी का भरत डालकर नीचे मकानों को ऊंचा उठवाया?
- नंदपुर-कलौड़ नामक गांव को।
76. बहेड़ नामक गांव में गुरु जी ने संगत की भलाई के लिए कौन-सा कार्य किया?
- स्थानीय परम्परा के अनुसार इस गाँव ने नजदीक खरड़ वाली नदी निकलती थी जो बरसात के दिनों में गाँव का नुकसान कर देती थी। गुरु साहिब ने संगत इकट्ठी करके गाँव के चारों ओर बांध बनवाकर नदी का प्रवाह मोड़ दिया।
77. मकारपुर गाँव में श्री गुरु तेग बहादर जी कितने दिनों तक रुके?
- मकारपुर की रहने वाली 'माई माड़ी' ने गुरु साहिब और समस्त संगत की अपने हाथों से लंगर (भोजन पदार्थ) त्यार करके सेवा की। गाँव वासियों की सेवा भावना देख कर गुरु साहिब इस जगह पर 7 दिनों तक रुके।

78. नौलकखा गाँव का यह नाम प्रचलित होने का क्या कारण है?
- इस गाँव में लकखी नामक व्यापारी द्वारा श्रद्धा के साथ भेंट किए गए नौं टकों को श्री गुरु तेग बहादर जी ने नौं लाख टकों के बराबर बताया। इसके बाद इस गाँव का नाम नौलकखा पड़ गया।
79. आकड़ नामक स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित गुरुद्वारा नीम साहिब का क्या इतिहास है?
- श्री गुरु तेग बहादर जी इस स्थान पर एक नीम के पेड़ के नीचे बैठे थे जो अभी भी मौजूद है। गुरुद्वारा साहिब के ऊपर मौजूद इस नीम के वृक्ष की केवल वही शाखा मीठी है जिस से गुरु साहिब ने दातुन तोड़कर की थी, बाकी सभी शाखाएँ कड़वी हैं। यहां पहुंचने पर एक बद्री सिक्ख ने गुरु की सेवा की और बाकी गांव के लोग अकड़ (आकड़) कर बैठे रहे।
80. किस श्रद्धालु के प्रेम अधीन श्री गुरु तेग बहादर जी सैफ़ाबाद पहुँचे?
- सैफ़ाबाद के सूफी स्वभाव वाले नवाब सैफ़ खान के प्रेम अधीन गुरु साहिब सैफ़ाबाद पहुँचे जहां पर नवाब सैफ़ खान ने प्यार और सतिकार सहित लगभग दो हफ्ते गुरु साहिब को अपने पास रखा।
81. स्थानीय परम्परा के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी सैफ़ाबाद कितनी बार आए थे?
- तीन बार- पहली बार 1664 ई. में, दूसरी बार 1670 ई. में और तीसरी बार

1675 ई. में ।

82. नवाब सैफ़ खान का औरंगज़ेब से क्या संबंध था?

➤ नवाब सैफ़ खान, तर्बियत खान बरछशी का बेटा और फिदायी खां का भाई था। फिदायी खां को औरंगज़ेब ने अपना धर्म भाई बनाया हुआ था। इस प्रकार नवाब सैफ़ खान रिश्ते में औरंगज़ेब का धर्म भाई लगता था।

83. नवाब सैफ़ खान ने श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-कौन सी प्रेम भेंटाएं दीं ?

➤ श्री गुरु तेग बहादर जी की सवारी के लिए एक सुंदर घोड़ा और माता नानकी जी के लिए रथ, लंगर के लिए बर्तन, अगली यात्रा के लिए तंबू और ऊँट के अलावा अनेक कीमती सौगातें भेंट की।

84. सैफाबाद शहर का वर्तमान नाम क्या है?

➤ वर्तमान में यह शहर, श्री गुरु तेग बहादर जी के नाम पर 'बहादरगढ़' के नाम से जाना जाता है।

85. लैहल गाँव में जिस स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई भाग राम की प्राथना स्वीकार कर के गाँव वासियों का नामुराद रोग दूर किया, वहाँ कौन-सा गुरुद्वारा साहिब है?

➤ गुरुद्वारा दुख निवारण साहिब (वर्तमान पटियाला)।

86. पटियाला शहर में श्री गुरु तेग बहादर जी की स्मृति से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?
- 2 गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा मोती बाग साहिब और गुरुद्वारा दुख निवारण साहिब ।
87. गढ़ी नजीर (जिला कैथल, हरियाणा) नामक स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी की याद से संबंधित कौन-सा गुरुद्वारा साहिब मौजूद है?
- इस स्थान पर गुरु साहिब एक पठान श्रद्धालु मुहम्मद बरछश के पास रुके थे। यहाँ उनकी याद में गुरुद्वारा श्री गढ़ी साहिब मौजूद है जो पंजाब के समाना शहर के नज़दीक है।
88. समाना के आगे श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-कौन से गाँव में अपने पवित्र चरण डाले?
- फग्गूवाला, घराचों, मंगवाल, कांझला, मूलोवाल आदि गांवों में।
89. कांझला गांव को गुरु साहिब ने किस बीमारी से मुक्त किया?
- कोढ़ की नामुराद बीमारी से पीड़ित कांझला गांव के निवासीयों की समर्पित सेवा भावना देख कर गुरु साहिब ने वचन किया की इस गाँव में आगे से किसी को कोढ़ नहीं होगा।
90. मूलोवाल गांव से श्री गुरु तेग बहादर जी किस प्रकार संबंधित है?

- मूलोवाल गांव में गुरु साहिब पांच दिन तक रहे और यहां पीने का पानी खारा होने की समस्या को दूर करने के लिए मीठे पानी का कुआं लगवाया । इस स्थान पर गुरु साहिब ने गोंदा को 'भाई' की उपाधि से सम्मानित किया और एक गरीब सिक्ख भाई नानू को मंजी की बस्तिशश की ।
91. श्री गुरु तेग बहादर जी को अहंकारपूर्ण बोल बोलने वाले और बाद में इसके लिए क्षमा मांगने वाले चौधरी मलूके/ त्रिलोके का संबंध किस गांव से था?
- सेखा नामक गांव के साथ ।
92. चौधरी मलूके/चौधरी त्रिलोके की बहन ने अपने भाई की गलती का किस प्रकार पश्चाताप किया?
- चौधरी मलूके/ त्रिलोके की बहन अपने सिर पर गर्म दूध की गागर रख कर गुरु जी को दूध पिलाने के लिए कट्टू गांव आई और गुरु जी ने उसे क्षमा की बस्तिशश की।
93. सेखा नामक गाँव को श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या वरदान दिया था?
- सेखा गांव के निवासी बैरागी संप्रदाय के अनुयायी थे, जो गुरु साहिब की शिक्षाओं के बाद सिक्ख बन गए। गुरु साहिब ने उनको वरदान दिया कि वह जहां भी अपना निवास करेंगे वहाँ उनका वर्चस्व कायम रहेगा ।
94. फरवाही गाँव के ऊपर श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-सी बस्तिशश की ?

- जब श्री गुरु तेग बहादर जी फरवाही गांव में पहुंचे तो वहां हैजा की बीमारी फैली हुई थी जो गुरु जी की मेहर और गुरु जी के साथ मौजूद सिक्खों द्वारा की गई सेवा से ठीक हो गई ।
95. धलेउ/धलेवां नामक गांव में गुरु साहिब ने किसका कल्याण किया?
- तुलसी दास नामक एक वृद्ध योगी का जो छठे पातशाह श्री गुरु हसिंगेंद्र साहिब के समय से ही गुरु साहिब के दर्शनों के इंतजार में बैठा था। श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस गांव में पहुँचकर उसकी इच्छा को पूरा किया और उसे गुरुमति का मार्ग दर्शाया। इस स्थान पर 'गुरुद्वारा मंजी साहिब, पातशाही नौरी' मौजूद है।
96. हंडिआया नामक नगर में से श्री गुरु तेग बहादर जी ने लोगों को किस बीमारी से राहत दिलाई?
- तपाली नामक एक विशेष गला घोटने वाली बीमारी से भाई कान्ह सिंह नाभा अनुसार गुरु साहिब ने ताप (बूखार) से दुखी एक रोगी को तालाब में नहलाकर रोग मुक्त किया जिस का नाम अब गुरुसर सरोवर है।
97. हंडिआया गांव से धौला नामक गांव में प्रवेश करते समय गुरु साहिब के घोड़े ने आगे बढ़ने से इनकार क्यों कर दिया था?
- घोड़े के आगे बढ़ने से इनकार करने का कारण धौला गांव के खेत में लगा हुआ तम्बाकू था।

98. वर्तमान में इस स्थान पर कौन सा गुरुद्वारा साहिब मौजूद है?
- गुरुद्वारा अड़ीसर साहिब। यह गुरुद्वारा साहिब हंडिआया गांव और धौला गांव की सीमा पर बना हुआ है। गुरु साहिब के घोड़े द्वारा धौला गांव में प्रवेश न करने के कारण गुरुद्वारा साहिब में मौजूद श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश अस्थान हंडिआया गांव की जमीन पर है और पाठ करते समय ग्रंथी सिंह धौला गांव की जमीन पर बैठता है।
99. सोहीवाल गांव में श्री गुरु तेग बहादर जी के समय की कौन-सी निशानी मौजूद हैं?
- इस गांव में गुरु साहिब ने जिन कैर/करीर और खेजड़ी/जंड के वृक्षों के साथ घोड़े बांधे थे, वे अब भी मौजूद हैं और हरे-भरे हैं।
100. किस श्रद्धालु की बिनती स्वीकार करके श्री गुरु तेग बहादर जी ढिलवां नामक गांव में अपने पवित्र चरण डाले?
- मधो नामक श्रद्धालु की बिनती स्वीकार करके इस गांव में गुरु साहिब की याद में गुरुद्वारा साहिब पातशाही नौरीं, ढिलवां सुशोभित है।
101. भूपाल गांव के निवासियों द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी की सेवा न करने का क्या कारण था?
- भूपाल गांव के निवासी ब्राह्मणों के जाल में फंसे हुए थे जिन्होंने ब्राह्मणों के कहने पर गुरु साहिब के प्रति कोई सेवा भावना न दिखाई बीरन नामक इस गांव का निवासी, जो गुरु साहिब को गांव में दोबारा आने की बिनती करने गया था, उसको गुरु साहिब ने फलने-फूलने का आशीर्वाद दिया था।

102. भीखी नामक नगर का श्री गुरु तेग बहादर जी के साथ क्या ऐतिहासिक संबंध हैं?

- भीखी नगर में सुल्तान सखी सरवर के उपासक चौधरी देस राज (देसू) चहल ने श्री गुरु तेग बहादर जी का वचन मानकर सुल्तान सखी सरवर की उपासना छोड़कर सिक्ख धर्म अपनाया। गुरु साहिब उसको अपने पाँच तीर बरिशश किए। बाद में चौधरी देसू ने अपनी पत्नी कए कहने पर वह पाँच तीर तोड़कर चूल्हे में फैक दिए जिस कारण उसका वर्चस्व और उसका वंश दोनों ही खत्म हो गए।
- 103. समाउं (समांअ) गांव के जिमीदार को श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या आशीर्वाद दिया?

 - इस गांव के मानकी (जीवणा चहल) नामक जिमीदार द्वारा प्रशादे (रोटी) और लस्सी की सेवा से प्रसन्न होकर गुरु साहिब ने उस जिमीदार के घर भरपूर मात्रा में दूध होने का आशीर्वाद दिया।

- 104. काबुल और पेशावर से आने वाली सिक्ख संगत ने श्री गुरु तेग बहादर जी के किस स्थान पर दर्शन किए?

 - समाउं (समांअ) नामक गांव में।

- 105. गंदूयां गाँव के भाई मुगलू की गुरु साहिब ने किस इच्छा की पूर्ति की?

- मेहराज के युद्ध में वीरता दिखाने वाले छठे पातशाह के श्रद्धालु सिक्ख भाई मुगलू की इच्छा थी कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी उसके अंतिम समय में उसके पास हों। गुरु साहिब ने उसको वचन दिया था कि वह नौवें स्वरूप के समय उसकी इच्छा पूरी करेंगे। श्री गुरु तेग बहादर जी ने भाई मुगलू के अंतिम समय में उसके पास पहुंच कर उसकी इस इच्छा को पूरा किया।
106. खय्याला कलां में श्री गुरु तेग बहादर जी की स्मृति से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?
- तीन गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा श्री गुरुसर साहिब (गुरुद्वारा महतों वाला), गुरुद्वारा श्री तीरसर साहिब और गुरुद्वारा श्री बेरी साहिब।
107. खय्याला कलां में गुरु साहिब से संबंधित कौन-सी निशानियाँ मौजूद हैं?
- इस गांव में पंडित गुज्जर राम के वंश में से ज्ञानी राम सिंह के घर कांस्य की धातु से बना हुआ एक छन्ना (एक बर्तन) सुरक्षित है। इस छन्ने के बारे में यह परम्परा है कि पंडित गुज्जर राम इस छन्ने में गुरु जी को दूध छकाया (पिलाया) था। खय्याला कलां में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित एक बेरी का बृक्ष, उनके द्वारा त्यार करवाए गए दो कुएं और उनका एक तीर भी मौजूद है।
108. मौड़ मंडी नामक नगर में गुरु साहिब ने लोगों को किस भय से मुक्त किया?
- इस स्थान पर गुरु साहिब काणे जिन्न का निवास माने जाने वाले जंड (खेजड़ी) के वृक्ष के नीचे आकर ठहरे और लोगों को उस काणे जिन्न के

भय से मुक्त किया जिसके उर के कारण वह सूर्यास्त के बाद गांव से बाहर नहीं निकलते थे ।

109. मौड़ मंडी नामक नगर में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?
- 2 गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा साहिब मौड़ कलां, पातशाही नौरीं और गुरुद्वारा टाहला साहिब (मूल रूप में यह स्थान 'राजगढ़ कुब्बे' नामक गांव में था जो मौड़ मंडी शहर के क्षेत्रीय विस्तार के बाद इस शहर में ही शामिल हो गया ।)
110. भट्ट वहियों के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी की पहली गिरफ्तारी कब और किस स्थान से हुई?
- श्री गुरु तेग बहादर जी की पहली गिरफ्तारी हरियाणा राज्य के धमतान साहिब नामक गांव से कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष 11, संवत् 1722 विक्रमी (8 नवम्बर, 1665 ई.) को दीपावली के कुछ दिनों के पश्चात हुई ।
111. श्री गुरु तेग बहादर जी को किसके द्वारा गिरफ्तार किया गया था?
- आलम खां रुहेला द्वारा।
112. उस समय गुरु जी के साथ अन्य कौन-से सिक्ख गिरफ्तार किये गए थे?

- गुरु साहिब के साथ गिरफ्तार किये गये सिक्खों में भाई सती दास, भाई मती दास, भाई गवाल दास, भाई गुरदास, भाई संगत, भाई दयाल दास, भाई दग्गो आदि गुरसिक्ख शामिल थे।
113. पहली गिरफ्तारी के बाद गुरु साहिब को किस जगह पर रखा गया?
- पहली गिरफ्तारी के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी को औरंगज़ेब के हुक्म द्वारा राजा जय सिंह की नज़रबंदी के अधीन दिल्ली में रखा गया।
114. पहली गिरफ्तारी के बाद गुरु साहिब की रिहाई कब हुई?
- 02 महीने और 03 दिन की नज़रबंदी के बाद पोष मास की एकम, संवत् 1722 विक्रमी (जनवरी 1666 ई.)* को गुरु साहिब रिहा कर दिए गए।
115. धमतान साहिब गांव में किस गुरसिक्ख की सेवा से प्रसन्न होकर श्री गुरु तेग बहादर जी ने उस को भाई मीहां की उपाधि प्रदान की?
- गुरु साहिब ने भाई रामदेव जी (सातवें पातशाह के समय के सिक्ख) द्वारा जल छिड़कने की सेवा से प्रसन्न होकर, उनको भाई मीहां की उपाधि प्रदान की। इनसे सिक्ख धर्म में 'मीहांशाही' बलिशश की प्रारंभता हुई। बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंह ने भाई मीहां जी को 'साहिब' की उपाधि से निवाज कर 'भाई मीहां साहिब' के रूप में सम्मान प्रदान किया और काबुल-कंधार में

* प्रचलित धारणा के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म भी जनवरी 1666 ई. में ही मान लिया जाता है, किन्तु प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार उनका जन्म पोष मास की कृष्ण पक्ष 7, संवत् विक्रमी 1723 (22 दिसम्बर, 1666 ई.) को हुआ है।

सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए भेजा ।

116. भाई मीहां जी को गुरु साहिब ने कौन-कौन सी वस्तुएं प्रदान की?

➤ एक नगारा (नगाड़ा), एक निशान साहिब और एक दक्षिणी बैल ।

117. मुगल साम्राज्य के अंत के भविष्यमुखी वचन श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-से गाँव में किए?

➤ खुरक भूरा गांव (वर्तमान जिला जींद, हरियाणा) में ।

118. खटकड़ गाँव में श्री गुरु तेग बहादर जी के घोड़े चुराने आये चोरों के साथ क्या हुआ?

➤ इस गाँव में गुरु साहिब के घोड़े चुराने आए चोर अंधे हो गए, जिसके बाद उन्होंने गुरु जी से अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी ।

119. खटकड़ गाँव के निवासियों पर गुरु साहिब ने कौन-सी बरिष्याश की?

➤ खटकड़ गाँव में पीने का पानी खारा होने के कारण गाँव वासियों ने गुरु साहिब से मीठे पानी की कृपा करने के लिए बिनती की। इस बिनती को स्वीकार करते हुए गुरु साहिब ने तीर चलाकर बरिष्याश की कि जहां तक यह तीर गया है उस जगह तक का पानी मीठा रहेगा ।

120. कैथल में श्री गुरु तेग बहादर जी की स्मृति में कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?

- 2 गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा नीम साहिब और गुरुद्वारा मंजी साहिब ।
121. कैथल में श्री गुरु तेग बहादर जी से सिक्खों द्वारा सिक्ख धर्म के पर्व और त्योहारों के बारे में पूछने पर गुरु साहिब ने क्या उत्तर दिया?
- सिक्ख धर्म के पर्व और त्योहार के संबंध में गुरु साहिब ने उत्तर दिया कि जिस दिन संगत इकट्ठी होकर अकाल पुरख (परमात्मा) की बात करे उस दिन सदैवकालीन गुरुपुरब है ।
122. बनी-बदरपुर नामक स्थान श्री गुरु तेग बहादर जी से किस प्रकार संबंधित है?
- गुरु साहिब ने इस गांव के एक जर्मींदार को धन का एक बदरा (थैला) देकर लोगों की भलाई के लिए एक कुआं और एक बाग लगवाने का आदेश किया।
123. बारना नामक नगर में श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या उपदेश दिया?
- बारना नगर में गुरु साहिब ने एक किसान को उपदेश किया कि तंबाकू का त्याग करने से घर में समृद्धि रहेगी, लेकिन तंबाकू का सेवन करने से घर में दरिद्रता आ जाएगी। इस नगर में गुरु साहिब ने एक संतानहीन स्त्री द्वारा उनके लिए बनाया गया वस्त्र गृहण किया। गुरु साहिब की कृपा से उसको संतान की प्राप्ति भी हुई ।
124. बहर जच्छ नामक स्थान का श्री गुरु तेग बहादर जी से क्या संबंध है?

- श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस स्थान पर भाई मल्ला नामक निषावान बढ़ई सिक्ख के घर तीन दिनों तक निवास किया था।
125. कुरुक्षेत्र पहुँचने के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी ने किस स्थान पर पड़ाव किया?
- शेख चिल्ली के मकबरे की उत्तर दिशा में स्थानेश्वर मंदिर के पास सरस्वती नदी के तट पर। इस स्थान पर गुरु साहिब की याद में गुरुद्वारा साहिब, पातशाही नौरीं (झांसा रोड, कुरुक्षेत्र) सुशोभित है।
126. कड़ा-मानकपुर श्री गुरु तेग बहादर जी से किस प्रकार संबंधित है ?
- कड़ा-मानकपुर में गुरु साहिब ने मलूक दास नामक वैष्णव का मांस खाने या न खाने वाला भ्रम दूर किया।
127. मौजूदा उत्तर प्रदेश के कितने शहर श्री गुरु तेग बहादर जी का पावन चरण स्पर्श प्राप्त हैं ?
- लगभग 16 शहर।
128. मथुरा में गुरु साहिब की याद में कितने गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हैं?
- दो गुरुद्वारा साहिब- 1. गुरुद्वारा गुरु तेग बहादुर, गऊ घाट (कांस टीले के पास) 2. गुरुद्वारा गुरु तेग बहादर श्री गुरु सिंह सभा (रेलवे स्टेशन से लगभग 2 किमी दूर)।

129. आगरा शहर में माई जरसी ने श्री गुरु तेग बहादर जी को क्या भेंट किया?
- माई जरसी ने अपने हाथों से तैयार किया गया एक कपड़े का थान बहुत ही प्रेम और सतिकार सहित श्री गुरु तेग बहादर जी को भेंट किया ।
130. माई जरसी द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी को कपड़े का थान भेंट करने वाले स्थान पर कौन सा गुरुद्वारा मौजूद है?
- गुरुद्वारा माई थान ।
131. प्रयागराज (इलाहाबाद) में गुरु जी ने लोगों को क्या उपदेश दिया?
- गुरु साहिब ने लोगों को समझाया की सबसे बड़ा तीर्थ 'साथ संगत' है। प्रभु का नाम हृदय में प्रगत करना ही सरस्वती को प्रगत करना है और अकाल पुरख कए साथ सदैव मिलाप होना ही असल अर्थों में संगम है।
132. श्री गुरु तेग बहादर जी प्रयागराज (इलाहाबाद) में कितना समय ठहरे?
- लगभग 6 महीने ।
133. 'महिमा प्रकाश' स्रोत के अनुसार किस स्थान की संगत प्रयागराज (इलाहाबाद) निवास के दौरान श्री गुरु तेग बहादर जी के दर्शन करने आई?
- जौनपुर की संगत ।

134. प्रयागराज (इलाहाबाद) में गुरु साहिब से संबंधित कौन सा गुरुद्वारा है?
- गुरुद्वारा पक्की संगत (मुहल्ला अहियापुर में)।
135. मिर्जापुर की संगत के नाम श्री गुरु तेग बहादर जी के कितने हुक्मनामे प्राप्त होते हैं?
- एक हुक्मनामा।
136. श्री गुरु तेग बहादर जी का हस्ताक्षर किया हुआ गुटका साहिब किस स्थान पर मौजूद हैं?
- अहरौरा नामक नगर में।
137. वाराणसी (बनारस) में गुरु जी ने भाई गुरबख्श को क्या आशीर्वाद दिया?
- गुरु साहिब ने जौनपुर के भाई गुरबख्श को एक मृदंग (संगीतक साज) की बस्तिश करके उसकी वंश में कथा कीर्तन के प्रवाह चलने का आशीर्वाद दिया।
138. वाराणसी (बनारस) निवास के दौरान कौन-से प्रमुख सिक्खों ने श्री गुरु तेग बहादर जी की सेवा की?

- भाई जवेहरी मल्ल, भाई कल्याण मल्ल, भाई बाबू राय, भाई भिखारी आदि सिक्खों ने ।
139. भाई कान्ह सिंह नाभा के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी वाराणसी (बनारस) में कितने समय तक रहे?
- 7 महीने, 13 दिन ।
140. श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा वाराणसी (बनारस) की संगत को भेजे गए कितने हुक्मनामे प्राप्त होते हैं?
- 7 हुक्मनामे ।
141. किस गुरसिक्ख का उल्लेख वाराणसी (बनारस) के लगभग सभी हुक्मनामों में मिलता है?
- भाई जवेहरी मल्ल जी ।
142. श्री गुरु तेग बहादर जी की स्मृति में वाराणसी (बनारस) में कितने गुरुद्वारा साहिबान हैं?
- दो गुरुद्वारा साहिबान – 1. गुरुद्वारा बड़ी संगत, नीची बाग
2. गुरुद्वारा छोटी संगत, जगत गंज
143. वाराणसी (बनारस) में श्री गुरु तेग बहादर जी की कौन-सी पवित्र निशानियाँ

मौजूद हैं?

- यहाँ पर गुरु जी के दो निजी चोले (एक कुर्ते जैसा वस्त्र) और चरणों का एक पवित्र जोड़ा जो 'गुरुद्वारा बड़ी संगत' में सुशोभित हैं।
 - 144. वर्तमान बिहार और झारखण्ड राज्यों के कितने शहरों श्री गुरु तेग बहादर जी के पावन चरण स्पर्श प्राप्त हैं?
-
- बिहार राज्य - लगभग 9 शहर और झारखण्ड राज्य - 1 शहर
-
- 145. श्री गुरु तेग बहादर जी के श्रद्धालु चाचा फग्गू मल्ल का संबंध किस स्थान से है और वर्तमान समय में यह स्थान कहाँ पर है?
-
- सासाराम से, वर्तमान में यह स्थान बिहार प्रांत के रोहतास जिले में है।
-
- 146. चाचा फग्गू मल्ल की कौन-सी इच्छा को श्री गुरु तेग बहादर जी ने पूरा किया?
-
- चाचा फग्गू मल्ल की यह इच्छा थी कि गुरु साहिब अपने घोड़े समेत उसके घर प्रवेश करें। गुरु साहिब की आने की प्रतीक्षा और उत्साह में अपने घर के दरवाजे इतने बड़े बनवाए थे जिसमें घोड़ा समेत अंदर प्रवेश किया जा सकता था। श्री गुरु तेग बहादर जी घोड़े सहित उसके घर में प्रविष्ट होकर उनकी इच्छा को पूरा किया।
-
- 147. सासाराम में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने गुरुद्वारा साहिब हैं?

- 3 गुरुद्वारा साहिब- गुरुद्वारा चाचा फगगू मल्ल, गुरुद्वारा टकसाली संगत और गुरुद्वारा गुरु का बाग ।
148. गया नामक स्थान पर पंडितों ने जब गुरु साहिब को उनके पूर्वजों का पिंड दान करने के लिए कहा तो गुरु साहिब ने क्या उत्तर दिया?
- गुरु साहिब ने पंडितों को उत्तर दिया कि उनके पूर्वज बाणी पढ़ने और सुनने से मुक्त हो गये हैं। इसलिए उनका पिंड दान करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
149. गया से पटना के रास्ते में आने वाली कर्मनाशा नदी के संबंध में पाए जाने वाले भ्रम को श्री गुरु तेग बहादर जी ने किस प्रकार तोड़ा?
- इस नदी के संबंध में आम हिंदू मान्यता थी कि इसमें स्नान करने से मनुष्य के शुभ कर्म नाश हो जाते हैं। गुरु साहिब ने यह भ्रम को तोड़ने के लिए खुद नदी में स्नान किया और वचन किया कि किसी नदी में स्नान करने से नेकी के कर्म नाश नहीं हो सकते।
150. श्री गुरु तेग बहादर जी पटना साहिब कब पहुंचे? उस समय पटना का शासक कौन था?
- मई 1666 ई. को, शासक- नवाब रहीम बख्श ।
151. पटना पहुंचकर श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपना सबसे पहला पड़ाव कहाँ पर किया?

- पटना शहर के बाहर एक बाग में इमली के पेड़ के नीचे, जहां वर्तमान समय में गुरुद्वारा गुरु का बाग मौजूद है। गुरु साहिब के इस बाग में चरण पड़ने से यह सूखा हुआ बाग हरा-भरा हो गया।
152. श्री गुरु तेग बहादर जी पटना साहिब में सबसे पहला निवास किस श्रद्धालु के घर किया?
- सेठ जैत मल्ल जी की हवेली में जो गऊघाट मोहल्ले में थी। इस स्थान पर अब गुरुद्वारा गऊघाट साहिब स्थित है। बाद में सिक्ख संगत ने गुरु साहिब के निवास के लिए एक भव्य हवेली (वर्तमान तर्फ श्री हरिमंदिर जी, पटना साहिब) त्यार करवाई।
153. पटना शहर में श्री गुरु तेग बहादर जी कितने समय तक रुके?
- इस स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी ने संवत् 1723 विक्रमी के आषाढ़ (जून-जुलाई 1666 ई.) से लेकर आधिन (सितंबर-अक्टूबर 1666 ई.) तक चार महीने की बारिश का समय (चौमासा) व्यतीत किया था। इसके बाद गुरु साहिब सिक्ख धर्म का प्रचार करने के लिए आसाम की तरफ चले गये।
154. प्रचार के लिए पटना से आसाम की तरफ जाते समय श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा परिवार की देखभाल की जिम्मेदारी किस गुरसिक्ख को सौंपी गई?
- भाई दयाल दास जी को, जो भाई मनी सिंह के सबसे बड़े भाई थे। भाई दयाल दास के साथ-साथ भाई मेहर चंद मसंद और भाई चैनसुख को भी परिवार की सेवा संभाल का कार्य सौंपा गया।

155. पटना साहिब की संगत के नाम श्री गुरु तेग बहादर जी के कितने हुक्मनामे प्राप्त होते हैं?
- आठ हुक्मनामे जो वर्तमान में तख्त श्री हरिमंदिर जी, पटना साहिब में मौजूद हैं।
156. किस गुरसिक्ख का उल्लेख पटना साहिब के लगभग सभी हुक्मनामों में प्राप्त होता है?
- भाई दयाल दास जी।
157. पटना साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने गुरुद्वारे हैं?
- तीन गुरुद्वारे- तख्त श्री हरिमंदिर जी, गुरुद्वारा गजघाट और गुरुद्वारा गुरु का बाग।
158. पटना साहिब से ढाका जाते समय श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-कौन से प्रमुख स्थानों का दौरा किया?
- बाढ़ गाँव, मुंगेर, भागलपुर, कंत नगर, साहिब गंज, राजमहल, मालदा, गोदागिरी, गोपालपुर, पबना, मुर्शिदाबाद आदि स्थानों पर।
159. वर्तमान समय में किस क्षेत्र की सिक्ख आबादी सरकारी दस्तावेजों में अपनी जाति 'सोढ़वंशी खालसा' लिखवा कर स्वयं को श्री गुरु तेग बहादर

जी के वंश के साथ जोड़ती है?

- बिहार राज्य के कटिहार जिले के लगभग 10 गांवों की सिक्ख आबादी। इस क्षेत्र में संगत द्वारा 'कंत नगर' नामक ऐतिहासिक स्थान से मिट्टी लाकर 'लक्ष्मीपुर' नामक नगर में यादगारी गुरद्वारा साहिब स्थापित किया गया है।
- 160. 'काढ़ा गोला' नामक स्थान की श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कौन-सी परम्परा है?
- स्थानीय परम्परा के अनुसार, श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस स्थान पर कड़ाह प्रशाद बड़े-बड़े गोलों के रूप में खुली मात्रा में वरताया (वितरित) किया था। (कड़ाह प्रशाद आटे, धी, चीनी और पानी से तैयार किया गया पवित्र प्रशाद है जो गुरुद्वारा साहिब में संगत को वरताया (बाँटा) जाता है।) वर्तमान में यह स्थान बिहार राज्य के कटिहार जिले में है।
- 161. मुंगेर नामक स्थान पर पड़ाव के दौरान श्री गुरु तेग बहादर जी ने पटना साहिब भाई दयाल दास जी को हुक्मनामा भेजकर कौन-कौन सी वस्तुएँ मँगवाईं?
- सिरोपाओ के लिए कुछ पगड़ियाँ और अगली यात्रा के लिए कुछ तंबू।
- 162. मुंगेर में गुरु जी की याद में कौन-सा गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है?
- गुरद्वारा पक्की संगत।

163. गुरु साहिब के मालदा नामक नगर में पहुँचने पर कौन-सी घटना घटित हुई?
- जब गुरु साहिब मालदा पहुँचे तो वहाँ सिक्खी का प्रचार केन्द्र (धर्मशाला/गुरुद्वारा) पूरी तरह खाली था क्योंकि वहाँ का धर्मशालिया अनगिनत लोगों की तरह 'पण्डुआ ग्राम' का मेला देखने गया हुआ था। गुरु जी ने उसे इस गलती के लिए फटकार लगाई और भविष्य में सावधान रहने को कहा।
164. श्री गुरु तेग बहादर जी किस गुरसिक्ख के निमंत्रण पर ढाका पहुँचे?
- ढाका के एक प्रचारक भाई बुलाकी दास के निमंत्रण पर।
165. श्री गुरु तेग बहादर जी ढाका पहुँचने पर वहाँ का गवर्नर कौन था?
- नवाब शाइस्ता खान।
166. ढाका पहुँचने पर गुरु साहिब का सिक्ख संगत द्वारा किस प्रकार स्वागत किया गया?
- ढाका गुरु नानक देव जी के समय से ही सिक्खी प्रचार का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। श्री गुरु तेग बहादर जी यहाँ पहुँचने पर ढाका की सिक्ख संगत ने बहुत ही उत्साहपूर्ण ढंग से उनका स्वागत किया और भाई बुलाकी दास जी की तरफ से सिक्ख संगत के सहयोग से गुरु साहिब के ठहरने के लिए बहुत सुंदर इमारत तैयार करवाई गई।

167. गुरु साहिब ने ढाका की सिक्ख संगत की श्रद्धा और सेवा भावना देखकर इस स्थान को किस प्रकार गौरवान्वित किया?
- गुरु साहिब ने ढाका को 'सिक्खी का कोठा' कह कर गौरवान्वित किया।
168. भाई बुलाकी दास और उसकी माता ने श्री गुरु तेग बहादर जी की किस प्रकार सेवा की?
- ढाका में गुरु साहिब भाई बुलाकी दास के घर में ठहरे थे। भाई बुलाकी दास ने गुरु साहिब के लिए एक कीमती पलंग त्यार करवाया। उसकी वृद्ध माता ने बड़ी श्रद्धा भाव के साथ गुरु साहिब की सेवा की और अपने हाथ से त्यार की हुई एक कीमती पोशाक गुरु साहिब को पहनाई।
169. भाई बुलाकी दास की माता ने गुरु साहिब के सामने कौन-सी इच्छा व्यक्त की?
- भाई बुलाकी दास की माता ने गुरु साहिब से बिनती की कि वे श्री गुरु तेग बहादर जी की तरस्वीर बनवाकर अपने पास यादगार के रूप में रखना चाहती है। गुरु जी ने इस संबंध में भाई बुलाकी दास की माता से कहा कि गुरु का शब्द (गुरबाणी) ही गुरु की असल यादगार है। इसलिए गुरु के शब्द को ही गुरु की यादगार बनाना चाहिए।
170. गुरु जी ने भाई बुलाकी दास की माता की यह इच्छा कैसे पूरी की?

- सिक्ख परम्परा के अनुसार गुरु जी ने अति श्रद्धा के साथ की हुई इस बिनती को मानते हुए शाही चित्रकार से अपना चित्र बनवाना कबूल भी कर लिया। चित्रकार ने गुरु साहिब का बाकी चित्र तो बना दिया परंतु वह गुरु जी के तेजरस्वी चेहरे का प्रभाव सहन ना कर पाने के कारण चित्र में गुरु साहिब के चेहरे का सही स्वरूप ना बना सका।
171. ढाका निवास के दौरान संगत की बिनती कबूल करते हुए गुरु साहिब ने कौन-से क्षेत्रों में अपने पवित्र चरण डाले?
- सिलहट, चिटागांग (चटगांव), सोनदीप, सीता कुंड, कोमीला, कोलगांव, बंसखली आदि नगर।
172. ढाका में श्री गुरु तेग बहादर जी को कौन-सा पारिवारिक शुभ समाचार मिला?
- ढाका में गुरु साहिब को समाचार मिला कि पौष मास के शुक्ल पक्ष 7 (22 दिसम्बर, 1666 ई.) को पटना साहिब में उनके घर एक सुन्दर और तेजरस्वी पुत्र ने जन्म लिया है।
173. श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने नवजात पुत्र का नाम क्या रखा?
- गुरु साहिब ने अपने नवजात पुत्र का नाम गोबिंद दास* रखा जो बाद में श्री

* यह नाम श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा पटना साहिब की संगत को भेजे गए हुक्मनामों में दर्ज विवरण के अनुसार है। सिक्ख परंपरा में प्रचलित नाम (गुरु) गोबिंद राय जी है।

गुरु गोबिंद सिंह जी के नाम से सिक्ख पंथ के दसवें गुरु के रूप में जाने गए।

174. श्री गुरु तेग बहादर जी के घर, संतान रूप में पुत्र ने विवाह के कितने समय बाद जन्म लिया था?
- श्री गुरु तेग बहादर जी के विवाह के लगभग 34 वर्ष के लंबे समय बाद।
175. श्री गुरु तेग बहादर जी की याद में ढाका में कौन सा गुरुद्वारा स्थापित किया गया है?
- गुरुद्वारा संगत टोला।
176. श्री गुरु तेग बहादर जी किस राजा के साथ आसाम के अभियान पर गए थे?
- राजा राम सिंह के साथ, जो गुरु जी के श्रद्धालु राजा जय सिंह और रानी पुष्पा देवी का पुत्र था और औरंगज़ेब के अधीन मनसबदार था।
177. राजा राम सिंह द्वारा गुरु साहिब को आसाम के अभियान पर साथ चलने के लिए अनुरोध करने का क्या कारण था?
- राजा राम सिंह ने गुरु जी को आसाम के अभियान पर साथ चलने इसलिए अनुरोध किया क्योंकि आसाम जादू-टोटकों का देश होने के कारण राजा राम सिंह की मां पुष्पा देवी ने उसे, आध्यात्मिक आश्रय के रूप में गुरु साहिब को अपने साथ लेकर जाने की ताकीद की थी।
178. आसाम के अहोम कबीले द्वारा गुरु साहिब और राजा राम सिंह की सेना में

भय पैदा करने के लिए क्या प्रयास किए गए?

- स्थानीय इतिहास के अनुसार, अहोम कबीले की तरफ से गोवालपारा की रहने वाली नेताई धोबन नाम की जादूगरनी द्वारा गुरु साहिब और राजा राम सिंह की सेना पर विभिन्न प्रकार के भयानक जादुई हमले किये जो श्री गुरु तेग बहादर जी की उपस्थिति के कारण असफल रहे।
179. इस घटना वाले स्थान धुबरी पर श्री गुरु तेग बहादर जी के ऊपर किए गए जादुई हमले की कौन-सी निशानी मौजूद है?
- नेताई धोबन जादूगरनी द्वारा अपने जादू से गुरु साहिब के ऊपर फेंका गया एक बड़े आकार का भयानक पत्थर इस स्थान पर मौजूद है जो गुरु साहिब से 100 मीटर दूर गिर कर जमीन में धस गया था। यह पत्थर 28 फुट लंबा 3 फुट चोड़ा है जो 18 फुट जमीन के अंदर धसा हुआ है। जादूगरनी द्वारा अपने जादू से गुरु साहिब के ऊपर फेंका गया एक बड़े आकार वाला बरगद का वृक्ष, जो हवा में रुक गया था, वह बरगद का वृक्ष भी इस स्थान पर मौजूद है।
180. नेताई धोबन जादूगरनी द्वारा गुरु साहिब के ऊपर किए गए जादू के असफल होने की प्रामाणिकता कहां से होती है?
- गुरु साहिब के ऊपर किए गए जादू के असफल होने की प्रामाणिकता कामाख्या देवी के मंदिर के पंडे की लिखित से प्राप्त होती है।
181. आसाम के अभियान में गुरु साहिब के साथ जाने से इस अभियान पर क्या

प्रभाव पड़ा?

- गुरु साहिब के ऊपर जादू का प्रभाव ना होता देख कर आसाम के अहोम कबीले के राजा चक्रध्वज प्रणपाल सिंह अपने कबीले समेत गुरु साहिब के चरणों पर गिर पड़ा गुरु साहिब ने दोनों पक्षों के बीच शांति समझौता करवा कर खूनी युद्ध होने से बचा लिया ।
182. आसाम के अहोम कबीले और मुगल सेना के बीच करवाए गए शांति समझौते की गुरु साहिब ने शांति वाली कौन-सी निशानी स्थापित की?
- गुरु साहिब ने दोनों राजाओं की सेनाओं से पाँच- पाँच ढालें मिट्टी की भरवा कर एक ऊंचा चबूतरा स्थापित किया जिसकी ऊँचाई 14.5 फुट है ।
183. आसाम में उपरोक्त घटना से संबंधित कौन सा गुरुद्वारा साहिब मौजूद है?
- गुरुद्वारा दमदमा साहिब, धुबरी ।
184. गुरुद्वारा दमदमा साहिब, धुबरी किस नदी के तट पर स्थित है?
- ब्रह्मपुत्र नदी ।
185. धुबरी में गुरु साहिब के दर्शन आसाम के राजा राम राय को श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या आशीर्वाद दिया?

- आसाम के राजा राय द्वारा पुत्र की दात मांगने पर गुरु साहिब ने उसको आशीर्वाद दिया कि उसके घर एक तेजस्वी पुत्र पैदा होगा जिसके माथे पर गुरु बस्तिशश का चिन्ह 'इक ओअंकार' बना हुआ होगा ।
186. आसाम की प्रचार यात्रा से पटना साहिब वापिस लौटकर श्री गुरु तेग बहादर जी अपने सपुत्र गोबिंद दास* जी को उनके जन्म के पश्चात पहली बार कितने समय बाद मिले?
- लगभग चार वर्ष की आयु होने पर श्री गुरु तेग बहादर जी अपने सपुत्र गोबिंद दास* जी से पहली बार मिले। इस स्थान पर गुरुद्वारा गुरु का बाग सुशोभित है। गुरु साहिब को अपने सपुत्र के जन्म का समाचार भी ढाका नामक स्थान पर प्राप्त हुआ था ।
187. श्री गुरु तेग बहादर जी पटना साहिब से पंजाब की तरफ कब रवाना हुए?
- 18 मई, 1670 ई. को। इस समय गुरु साहिब का पूरा परिवार पटना साहिब में ही रहा ।
188. पटना साहिब से दिल्ली जाते समय अयोध्या में श्री गुरु तेग बहादर जी के ठहरने वाले स्थान पर कौन सा गुरुद्वारा स्थित है?
- गुरुद्वारा ब्रह्म कुंड जो सरयू नदी के तट पर है।

* यह नाम श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा पटना साहिब की संगत को भेजे गए हुक्मनामों में दर्ज विवरण के अनुसार है। सिक्ख परंपरा में प्रचलित नाम (गुरु) गोबिंद राय जी है।

189. लखनऊ में आदर सहित गुरु साहिब की सेवा करने वाले गुरसिक्खों के क्या नाम हैं?
- भाई चुहड़ जी और भाई चोझड़ जी।
190. लखनऊ से किन स्थानों से होते हुए श्री गुरु तेग बहादर जी ने दिल्ली पहुंचे?
- शाहजहाँपुर, बरेली, पीलीभीत, नानकमता, मोरादाबाद, हरिद्वार आदि स्थानों से होते हुए।
191. 'गुरु कीयां साखीयां' के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी दिल्ली में कितने समय तक रहे और इस समय दौरान उनके किस जगह पर ठहरने के हवाले प्राप्त होते हैं?
- 2 महीने, 13 दिन। इस समय दौरान उनके भाई कल्याण की धर्मशाला में ठहरने के हवाले प्राप्त होते हैं।
192. दिल्ली निवास के दौरान श्री गुरु तेग बहादर जी का कौन सा श्रद्धालु उनके दर्शन करने के लिए दिल्ली आया?
- सैफ़ाबाद (पटियाला) से नवाब सैफ़ खान।
193. श्री गुरु तेग बहादर जी कौन-से स्थानों से होते हुए दिल्ली से श्री आनंदपुर

साहिब पहुँचे?

- गुरु साहिब रोहतक, लाखन माजरा, जींद, पिहोवा, लखनौर साहिब, कीरतपुर साहिब होते हुए अक्टूबर, 1670 ई. को श्री आनंदपुर साहिब पहुँचे।
194. श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने पूरे परिवार को पंजाब (आनंदपुर साहिब) कब बुलाया?
- 1672 ई. के अंत में।
195. आनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी के दर्शन करने आए भाई कन्हैया जी को गुरु साहिब ने कौन-सी दात बरिशश की?
- गुरु साहिब ने भाई कन्हैया जी को उपदेश देकर सिक्ख धर्म के मार्ग का पथिक बनाया और सेवा भावना वाली समदृष्टि की दात बरिशश की।
196. भाई मनी सिंह आनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी के पास पक्के तौर पर सेवा के लिए कब आये?
- 29 मार्च 1672 ई. में इससे पहले वह 1657 ई. में 13 वर्ष की आयु के दौरान कीरतपुर साहिब में गुरु हरिराय साहिब और 1664 ई. में 20 वर्ष की आयु के दौरान बाबा बकाला में श्री गुरु तेग बहादर जी के दर्शन करके सिक्खी की दात प्राप्त कर चुके थे।
197. श्री गुरु तेग बहादर जी मालवा और बांगर (मौजूदा हरियाणा) के प्रचार दौरे

के लिए आनंदपुर साहिब से कब रवाना हुए?

- अक्टूबर, 1673 ई.।
198. गुरु साहिब ने मालवा और बांगर (मौजूदा हरियाणा) में कितने समय तक प्रचार किया?
- लगभग एक वर्ष।
199. वर्तमान समय तक विद्वानों द्वारा की गई खोज एवं समस्त स्रोत ग्रन्थों के आधार पर मालवा और बांगर (मौजूदा हरियाणा) में श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित कितने स्थान हैं?
- मालवा के स्थान- लगभग 100 बांगर (मौजूदा हरियाणा) के स्थान- लगभग 37 (इनमें से 4 स्थान श्री गुरु तेग बहादर जी शहादत के बाद शीश यात्रा से संबंधित हैं।)
200. चक्क माता नानकी में श्री गुरु तेग बहादर जी के पास सहायता की फरियाद लेकर कश्मीरी पंडितों का प्रतिनिधिमंडल कब आया?
- जेठ मास, शुक्ल पक्ष 11, संवत् 1732 विक्रमी (25 मई, 1675 ई.)।
201. भट्ट वही तलाऊंडा के अनुसार कश्मीरी ब्राह्मणों का प्रतिनिधिमंडल किसके नेतृत्व में गुरु साहिब के पास आया और इस प्रतिनिधिमंडल शामिल ब्राह्मणों की गिनती कितनी थी?

- मटन निवासी पंडित कृपा राम दत्त के नेतृत्व में 16 मुखिया ब्राह्मणों का प्रतिनिधिमंडल फरियाद लेकर गुरु साहिब के पास पहुंचा ।
202. कश्मीरी ब्राह्मणों का श्री गुरु तेग बहादर जी के पास फरियाद लेकर आने का क्या कारण था?
- औरंगजेब अपनी कट्टर धार्मिक नीति (दार-उल-इस्लाम) के तहत समस्त हिंदुस्तान को इस्लाम धर्म में लेकर आने के लिए गैर-मुसलमानों पर अत्याचार कर रहा था। उसने कश्मीरी ब्राह्मणों को इस्लाम या मौत में से एक रास्ता चुनने के लिए कहा जिस कारण वह अपना धर्म बचाने के लिए गुरु साहिब के पास फरियाद लेकर पहुंचे ।
203. श्री गुरु तेग बहादर जी के समय में औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति की पुष्टि किस समकालीन स्रोत से होती है?
- औरंगजेब के मुगल शासन के कर्मचारी साकी मुस्ताद खान द्वारा लिखित ‘मआसिरी आलमगीरी’ नामक स्रोत से ।
204. ‘मआसिरी आलमगीरी’ में दर्ज कौन-सी घटनाएँ औरंगजेब को गैर-मुसलमानों का विरोधी सिद्ध करती है?
- हिंदूओं पर दोबारा जजिया कर लगाना जिसे अकबर ने 1564 ई. में बंद कर दिया था, हिंदू धर्म की पाठशालाओं और मंदिरों को तोड़ना, गैर-मुसलमानों को सरकारी पदों से हटाना आदि ।

205. औरंगजेब द्वारा अपनी कठोर धार्मिक नीति के तहत तोड़े गए हिन्दू मंदिरों में कौन- से प्रसिद्ध हिन्दू मंदिर शामिल थे?
- गुजरात में सोमनाथ मंदिर, बनारस में विश्वनाथ मंदिर, मथुरा में केशव राय मंदिर आदि।
206. भाई संतोख सिंह ने श्री गुरु तेग बहादर जी के समय कश्मीरी पंडितों पर जुल्म करने वाले कश्मीर के सूबेदार का क्या नाम लिखा है?
- शेर अफगान खान जो कि इतिहासकारों के अनुसार औरंगजेब द्वारा इफतगार खान को प्रदान की गई उपाधि का नाम है।
207. श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने दर पर फरियाद लेकर आए कश्मीरी ब्राह्मणों की किस प्रकार सहायता की?
- श्री गुरु तेग बहादर जी ने कश्मीरी ब्राह्मणों को कहा कि उस औरंगजेब तक संदेश पहुँचा देना कि श्री गुरु तेग बहादर उनके नेता है। जो फैसला गुरु साहिब का होगा वही फैसला उन सब ब्राह्मणों का होगा। इस लिए उन ब्राह्मणों को फज्जूल तंग न किया जाए।
208. श्री गुरु तेग बहादर जी शहीदी के लिए आनंदपुर साहिब से दिल्ली कब रवाना हुए?
- श्री गुरु तेग बहादर जी सावन परविष्टे 8, संवत् 1732 बिक्रम (8 जुलाई 1675 ई.) को श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को गुरु गद्वी की जिम्मेदारी सौंप कर

11 जुलाई, 1675 ई. को दिल्ली के लिए रवाना हुए।

209. कौन-कौन से सिक्ख आनंदपुर से दिल्ली जाते समय गुरु साहिब के साथ थे?
- भाई मती दास जी, भाई सती दास जी, भाई दयाला जी, भाई उदा जी और भाई गुरदिता जी नामक पाँच सिक्ख।
210. दिल्ली जाते समय श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने परिवार और समस्त संगत को कौन-सा उपदेश दिया?
- गुरु साहिब ने समस्त संगत को श्री गुरु गोबिंद सिंह की आज्ञाओं का पालन करने के लिए कहा और उन्हें आस्तिक (मोह) से मुक्त होने कि शिक्षा दी कि शरीर का रिश्ता नदी के पानी के साथ हिलते तिनके और रात में पेड़ पर इकट्ठा होने वाले पक्षियों के रिश्ते के समान अनित्य हैं।
211. आनंदपुर साहिब से चल कर गुरु साहिब ने प्रथम पड़ाव किस स्थान पर किया?
- भरतगढ़ में। यहाँ मुख्य सड़क पर गुरु साहिब की याद में गुरुद्वारा मँजी साहिब, पातशाही नौरीं सुशोभित है।
212. भट्ट वही मुल्तानी सिन्धी अनुसार गुरु साहिब की दूसरी गिरफ्तारी किस जगह से हुई?

- मलकपुर रंघड़ा (रोपड़) नामक स्थान से ।
213. यह गिरफ्तारी कब और किस के द्वारा हुई?
- सावन प्रविष्टे 12, संवत् 1732 बिक्रमी (12 जुलाई, 1675 ई.) को, रोपड़ पुलिस थाने के थानेदार मिरजा नूर मह्मद द्वारा ।
214. भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अलावा इस गिरफ्तारी का विवरण और कौन-से स्रोत में मिलता है?
- 'गुरु कीयां साखीयां' और 'बंसावलीनामा दसां पातशाहीयां का' नामक स्रोतों में।
215. भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अनुसार इस गिरफ्तारी के बाद गुरु तेग बहादर जी को कितने समय तक जेल में रखा गया?
- 4 महीने, जिसकी पुष्टि न तो सिक्ख स्रोतों से होती है और न ही सिक्ख परम्परा से ।
216. भट्ट वही में दर्ज गुरु साहिब की चार महीने की कैद का विवरण सिक्ख स्रोत ग्रन्थों और सिक्ख परम्परा में न होने का क्या कारण हो सकता है?
- यह भी हो सकता है कि गुरु साहिब को चार महीने तक जेल में रखने की बात भट्ट वही में लिखित रूप में तो आई हो लेकिन उस पर अमल नहीं हो सका हो, जैसे 'तुज़क-ए-जहांगीरी' में वर्णित श्री गुरु अर्जन देव जी का घर और संपत्ति जब्त करने का आदेश लागू नहीं हो सका ।

217. किस आधार पर कहा जा सकता है कि इस गिरफ्तारी के बाद गुरु साहिब को रिहा कर दिया गया?
- सिक्ख परम्परा के अनुसार, गुरु साहिब ने अपनी शहादत से पहले मालवा और बांगर (वर्तमान हरियाणा) के अनेकों नगरों में अपने पवित्र चरण डाले। इसकी पुष्टि सिख स्नोत ग्रंथों में से भी होती है। प्रिं. सतिबीर सिंह ने इस गिरफ्तारी को एक चेतावनी के रूप में लिया है।
218. मलकपुर रंधडां की रिहाई के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपना पड़ाव किस स्थान पर किया?
- सैफाबाद में नवाब सैफ खान के पास जो गुरु साहिब का बहुत बड़ा श्रद्धालु था।
219. गुरु तेग बहादर सैफाबाद में नवाब सैफ खान के पास कितने समय तक रहे?
- गुरु साहिब ने चौमासा (बारिश के चार महीनों में से लगभग तीन महीने का समय) नवाब सैफ खान के पास व्यतीत किया।
220. शहादत के लिए आनंदपुर साहिब जाने के बाद तीन-चार महीने तक नवाब सैफुद्दीन के साथ रहने की पुष्टि किस सिक्ख ग्रंथ से होती है?
- श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ और तवारीख गुरु खालसा से।

221. चीका नगर में श्री गुरु तेग बहादर जी ने किस स्थान पर अपना पड़ाव किया?
- चीका नगर में श्री गुरु तेग बहादर जी ने सिक्ख धर्म के प्रचारक गलोरे मसंद के घर में पड़ाव किया जिसको गुरु साहिब ने हांसी और हिसार के इलाके में सिक्खी के प्रचार के लिए नियुक्त किया था।
222. गलोरे मसंद को श्री गुरु तेग बहादर जी ने कौन-सी वस्तु की बरिधाश की?
- श्री गुरु तेग बहादर जी ने गलोरे मसंद को तीरों से भरा हुआ एक तरकश बरिधाश किया।
223. श्री गुरु तेग बहादर जी किन स्थानों से होते हुए चीका से आगरा पहुँचे?
- श्री गुरु तेग बहादर जी करा साहिब, पिहोवा, धमतान साहिब, खरक भूरा, खटकड़, जींद, लाखन माजरा, रोहतक आदि स्थानों से होते हुए आगरा पहुँचे।
224. कौन-कौन से स्रोत ग्रंथों में श्री गुरु तेग बहादर जी के आगरा से गिरफ्तार होने के बारे में विवरण प्राप्त होता है?
- भाई संतोख सिंह द्वारा रचित 'श्री गुरु प्रताप सूरज ग्रंथ' और ज्ञानी ज्ञान सिंह द्वारा रचित 'तवारीख गुरु खालसा' से।

225. आगरा में श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी गिरफ्तारी किस प्रकार दी?
- सिक्ख स्रोत ग्रंथों के अनुसार गुरु साहिब ने एक गरीब मुस्लिम बजुर्ग चरवाहे को मिठाई खरीदने के लिए अपना एक कीमती दुशाला और हीरे से जड़ित कीमती अंगूठी दे कर बाग में मुगल सेना को अपने होने का एहसास करवा कर गिरफ्तारी दी ।
226. गुरु साहिब की आगरा वाली गिरफ्तारी से संबंधित चरवाहे का क्या नाम था?
- हसन अली जो आगरा के नजदीकी गांव ककरैठा का रहने वाला था ।
227. श्री गुरु तेग बहादर जी ने एक गरीब चरवाहे के माध्यम से अपनी गिरफ्तारी क्यों करवाई?
- सिक्ख परम्परा के अनुसार, बजुर्ग गरीब चरवाहे ने अपने मन में मन्त्र मांगी थी कि यदि गुरु साहिब उसके द्वारा अपनी गिरफ्तारी दे दें तो इस गिरफ्तारी के लिए रखी गई 500 सोने की मुहरों का इनाम की राशि के माध्यम से उसकी गरीबी दूर हो जाएगी और वह अपनी दो जवान लड़कियों की शादी करवा सकेगा । इसलिए गुरु साहिब ने उसकी मन्त्र पूरी करने के लिए नाटकीय ढंग से उस बजुर्ग चरवाहे द्वारा अपनी गिरफ्तारी करवाई ।
228. श्री गुरु तेग बहादर जी को गिरफ्तार करके किस के हवाले किया गया?
- दिल्ली के निजाम सफी खान और किलेदार मुल्तफत खान के हवाले

229. गुरु साहिब के साथ अन्य कौन-से सिक्खों को गिरफ्तार किया गया?
- भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी को।
230. गिरफ्तारी के बाद श्री गुरु तेग बहादर जी को किस हालत में कैद किया गया?
- गुरु साहिब को शारीरिक पीड़ा देकर विचलित करने के लिए एक छोटे से पिंजरे में कैद किया गया जिसमें न तो वह ठीक से उठ-बैठ सकते थे, न ही आराम कर सकते थे।
231. कुछ सिक्ख विद्वानों द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के समय औरंगजेब की मौजूदगी हसन अब्दाल नामक स्थान पर बताने का क्या कारण है?
- जादु नाथ सरकार द्वारा 'मआसिरी आलमगीरी' नामक फारसी पुस्तक के हिजरी वर्षों का इसवी वर्षों में किया गया गलत अनुवाद, जिस को कई सिक्ख विद्वानों ने बिना किसी खोज-पड़ताल के स्वीकार कर लिया।
232. 'मआसिरी आलमगीरी' अनुसार औरंगजेब की हसन अब्दाल से वापसी कब हुई?
- मार्च, 1675 ई.।
233. किस विश्वसनीय गवाही से यह बात सिद्ध हो जाती है कि श्री गुरु तेग बहादर की शहादत के समय औरंगजेब दिल्ली में था?

- ‘बचित्तर नाटक’ रचना में श्री गुरु गोविंद सिंह जी की गवाही जिसके अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपने शरीर रूपी बर्तन का ठीकरा दिल्ली के बादशाह के सिर पर तोड़ा । (ठीकर फोरि दिलीस सिरि प्रभ पुरि कीआ पयान॥)
234. औरंगजेब ने श्री गुरु तेग बहादर जी के सामने कौन-सी तीन शर्तें रख कर इनमें से एक शर्त स्वीकार करने को कहा गया?
- (क) इस्लाम धर्म स्वीकार करें
 - (ख) करामात दिखाएं
 - (ग) या मृत्यु के लिए तैयार रहें।
235. श्री गुरु तेग बहादर जी ने इनमें से कौन-सी शर्त स्वीकार की?
- गुरु साहिब ने अपना धर्म तब्दील करके इस्लाम धर्म स्वीकार करने वाली बात को पूरी तरह से नकार के, करामात को कहर का नाम देते हुए खुशी-खुशी शहीद होने वाली शर्त स्वीकार की ।
236. शाही काजी ने गुरु साहिब को शहीद करने के लिए कौन-सा फतवा जारी किया था?
- शीश (सिर) को धड़ से अलग करने का ।
237. श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत का फतवा जारी करने वाले शाही

काजी का नाम क्या था?

- काजी अब्दुल वहाब वोहरा ।
238. गुरु साहिब को शहीद करने से पहले उनके सामने कौन-कौन से सिक्खों को शहीद किया गया?
- भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी को ।
239. भाई मती दास जी और भाई सती दास जी के बीच क्या संबंध था?
- भाई मती दास जी और भाई सती दास जी दोनों सगे भाई थे ।
240. भाई मती दास जी, भाई सती दास जी और भाई दयाला जी को किस प्रकार शहीद किया गया?
- भाई मती दास जी के शरीर को मध्य से आरे के साथ चीर कर दो टुकड़े करके, भाई सती दास जी को रुई में लपेटने के बाद आग लगा कर और भाई दयाला जी को देग (एक बड़े बर्तन) के अंदर उबलते हुए पानी के बर्तन में बैठा कर शहीद किया गया ।
241. गुरु साहिब ने शहादत से पहले कौन-सा अंतिम कार्य किया?
- गुरु साहिब ने अपनी शहादत से पहले एक कुएं में स्नान करके श्री जपु जी साहिब का पाठ किया ।

242. श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत कब और कहाँ हुई थी?
- मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1732 विक्रमी (11 नवंबर, 1675 ई.), गुरुवार को दिल्ली के चांदनी चौक में।
243. गुरु जी के शहादत वाले स्थान पर कौन सा गुरु स्थान स्थित है?
- गुरुद्वारा सीस गंज साहिब, पुरानी दिल्ली।
244. गुरु साहिब को शहीद करने वाले जल्लाद का नाम क्या था और वह कहाँ का रहना वाला था?
- गुरु साहिब को शहीद करने वाले जल्लाद का नाम जलाल-उद-दीन था जो पंजाब के समाना शहर का रहने वाला था। (नवंबर 1709 ई. में बाबा बंदा सिंह बहादर जी ने समाना शहर पर हमला करके श्री गुरु तेग बहादर जी और छोटे साहिबजादों को शहीद करने वाले जल्लादों को उनके किए पापों की सजा दी।)
245. सिक्ख परम्परा के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद मौसम के मिज्जाज में क्या परिवर्तन आया?
- गुरु जी की शहादत के बाद एकदम काली आंधी चलने लगी और भारी बारिश शुरू हो गई। सिक्ख परम्परा के अनुसार यह विश्वास किया जाता है कि प्रकृति ने भी इस कहर भरे जुल्मी घटनाक्रम के प्रति इस ढंग से अपना नकारात्मक रवैया व्यक्त किया।

246. श्री गुरु तेग बहादर जी के शहीदी शरीर संबंधी औरंगज़ेब का क्या आदेश था?

➤ इस संबंध में औरंगज़ेब ने आदेश दिया था कि कोई भी व्यक्ति गुरु जी के शहीदी शरीर को चाँदनी चौंक से उठाने का साहस न करे। यह आदेश इसलिए दिया गया था ताकि लोगों में खौफ पैदा किया जा सके। इस आदेश की पूर्ति के लिए चाँदनी चौंक पर सख्त सैनिक पहरा लगा दिया गया।

247. शहादत के बाद गुरु साहिब का शीश (सिर) सतिकार सहित आनंदपुर साहिब ले कर जाने वाले भाई जैता जी कहां के रहने वाले थे?

➤ दिल्ली की दिलवाली गली के।

248. भाई जैता जी ने श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद उनका शीश (सिर) चाँदनी चौंक से कैसे उठाया?

➤ 'तारीख-ए-पंजाब' के अनुसार भाई जैता जी अपने पिता आज्ञा राम की इच्छा के अनुसार उनका शीश (सिर) काटने के बाद गुरु साहिब के शीश की जगह रख कर सम्मान सहित उनका पवित्र शीश उठा लिया।

249. भट्ट वही मुल्तानी सिंधी के अनुसार भाई जैता जी के साथ गुरु साहिब का पवित्र शीश (सिर) आनंदपुर साहिब लेकर जाते समय अन्य कौन-कौन से सिक्ख थे?

➤ भाई नानू जी/ननुया जी और भाई ऊदा जी।

250. गुरु साहिब का पवित्र शीश (सिर) आनंदपुर साहिब ले जाते समय भाई जैता जी और उनके साथी सिक्खों को रास्ते में कितने पड़ाव किए?
- छ: (6) पड़ाव- बागपत (उत्तर प्रदेश), बड़ खालसा* (जिला सोनीपत, हरियाणा), तरावड़ी (जिला करनाल, हरियाणा), अंबाला (हरियाणा), नाभा साहिब (चंडीगढ़ के नजदीक, ज़िला पटियाला) और कीरतपुर साहिब (ज़िला रूपनगर, पंजाब)।
251. कीरतपुर साहिब में माता गुजरी जी ने अपने गुरु पति के पवित्र शीश (सिर) को सिर झुका कर कौन-सी अरदास की?
- माता गुजरी जी ने दृढ़ता और धैर्य के साथ गुरु साहिब के पवित्र शीश को सिर झुका कर अरदास की- “आपकी निभ गई, मेरी भी निभ जाए।”
252. गुरु साहिब जी का पवित्र शीश (सिर) दिल्ली से ले कर आने वाले भाई जैता जी को श्री गुरु गोविंद (सिंह) ने क्या कह कर सम्मान प्रदान किया?
- 'रंगरेटे गुरु के बेटे' कहकर।
253. अमृत छकने के बाद भाई जैता जी को सिक्ख इतिहास में किस नाम से

* इस पड़ाव का विवरण स्थानीय परंपरा के अनुसार है। लिखित स्रोतों में इस स्थान का विवरण उपलब्ध नहीं है।

जाना गया?

- बाबा जीवन सिंह के नाम पर।
254. श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र शीश (सिर) का अंतिम संस्कार कब और कहाँ किया गया?
- मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 10, संवत् 1732 विक्रमी (16 नवंबर, 1675 ई.) को आनंदपुर साहिब में जहाँ अब गुरुद्वारा सीसगंज साहिब मौजूद है।
255. श्री गुरु तेग बहादर जी के शहीदी स्थान की खोज किस प्रकार हुई?
- बरगद के जिस पेड़ के नीचे गुरु साहिब की शहादत हुई, उस स्थान की शनारुत्ता सरदार बघेल सिंह करोड़सिंधिया ने मार्च, 1783 ई. में दिल्ली जीतने के बाद एक बजुर्ग मुस्लिम माशकी औरत (पानी ढोने वाली) से करवाई जिस के पिता ने गुरु जी की शहादत के बाद पानी के साथ शहादत वाले स्थान को साफ किया था।
256. सरदार बघेल सिंह के समय गुरु साहिब के शहीदी स्थान पर क्या मौजूद था?
- उस समय इस स्थान पर एक मस्जिद मौजूद थी, जिसकी जगह के बीच में दीवार निकलवा कर सरदार बघेल सिंह ने गुरुद्वारा साहिब का निर्माण करवाया। इसके बिल्कुल साथ ही चाँदनी चौक की कोतवाली मौजूद थी जिसका आधा हिस्सा 1971 ई. में दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजमेंट कमेटी

द्वारा खरीदा गया और कोतवाली का बाकी आधा हिस्सा 1983 ई. में भारत सरकार ने अपने आप गुरुद्वारा सीस गंज साहिब को दे दिया।

257. श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र धड़ का अंतिम संस्कार किस गुरसिक्ख द्वारा किया गया?
- भाई लक्खी शाह वणजारा द्वारा।
258. चांदनी चौक से गुरु साहिब के पवित्र धड़ को उठाने वाले भाई लक्खी शाह वणजारा की कौन-से सिक्खों ने मदद की?
- भाई हेमा, भाई नगाहीया, भाई हाड़ी और भाई धूमा ने। (भाई हेमा, भाई नगाहीया और भाई हाड़ी- ये तीनों भाई लक्खी शाह वणजारा के पुत्र थे)
259. भाई लक्खी शाह वणजारा ने गुरु साहिब के पवित्र धड़ का अंतिम संस्कार कैसे किया?
- भाई लक्खी शाह वणजारा, अपने सिक्ख साथियों की सहायता से गुरु साहिब के धड़ को, शाही सामान ढोने वाली अपनी बैल गाड़ियों में छिपा कर रायसीना गांव में स्थित अपने घर ले गए। वहां गुरु साहिब के धड़ का अंतिम संस्कार करने के बाद उन्होंने अपने घर को आग लगा दी ताकि मुगल सरकार को घर जल जाने का भ्रम बना रहे।
260. भट्ट वही जादोवंसीयां के अनुसार गुरु साहिब के धड़ का अंतिम संस्कार कब किया गया?

- मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 6, संवत् 1732 विक्रमी (12 नवंबर, 1675 ई.), दिन शुक्रवार को ।
261. भाई लक्खी शाह वणजारे और उनके साथियों के असाधारण साहसी कारनामे से संबंधित सिक्ख परम्परा में कौन-सी काव्य पंक्तियां प्रचलित हैं?
- चला चलाई हो रही, गढ़ गढ़ उखरे मेख ।
लक्खी नगाहिया लै गए, तुँ खड़ा तमाशा वेख ।
262. उपर्युक्त पंक्तियाँ किसके द्वारा रचित हैं?
- भट्ट केसो द्वारा ।
263. श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र धड़ के अंतिम संस्कार वाले स्थान पर कौन-सा गुरुद्वारा सुशोभित है?
- गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब, नई दिल्ली। (पहले यह गुरुद्वारा साहिब रायसीना गांव में मौजूद था। 1911 ई. में अंग्रेज सरकार द्वारा अपनी राजधानी कलकत्ता से बदल कर रायसीना गांव और रायसीना हिल्ल के क्षेत्र को अपनी राजधानी बनाने के लिए चुना गया जहां नई दिल्ली आबाद करके इसको राजधानी बनाया गया ।)
264. श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने नौवें पातशाह की शहादत को किस रूप में चित्रित किया?

- कलियुग की एक बड़ी घटना के रूप में। (कीनो बड़ो कलू महि साका॥)
265. श्री गुरु गोबिंद सिंह के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत का कारण क्या था?
- धर्मिक आजादी की रक्षा (धर्म हेत साका जिन किया)।
266. श्री गुरु तेग बहादर जी के श्रद्धालु नवाब सैफ़ खान ने गुरु जी शहादत का किस प्रकार शोक मनाया?
- नवाब सैफ़ खान ने गुरु जी की शहादत का 40 दिनों तक शोक मनाया और मातमी लिबास (शोक या दुख व्यक्त करने के लिए पहना जाने वाला विशेष वस्त्र) पहना।
267. चाँदनी चौक की कोतवाली के दरोगा ख्वाजा अब्दुल्ला पर श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत का क्या असर हुआ?
- गुरु जी की शहादत के बाद ख्वाजा अब्दुल्ला अपनी नौकरी से इस्तीफा दे कर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के दरबार में श्री आनंदपुर साहिब आ गया और उसका पुत्र भी गुरु दरबार में ही रहा।
268. 'मआसिरी आलमगीरी' नामक स्रोत में गुरु जी की शहादत के बाद सिक्खों की तरफ से होने वाली प्रतिक्रिया के रूप में कौन-सी तीन घटनाओं का विवरण प्राप्त होता है?

- (क) 24 जून, 1676 ई. को चांदनी चौक में औरंगज़ेब के घोड़े पर सवार होते समय एक सिक्ख ने उस पर डंडा फेंककर मारा जो उसके अंगरक्षक की छतरी से जा लगी ।
 - (ख) 19 अक्टूबर, 1676 ई. को नमाज पढ़कर लौटते समय औरंगज़ेब पर एक सिक्ख ने तलवार से हमला किया जिस से उसके अंगरक्षक की उंगली कट गई।
 - (ग) 27 अक्टूबर, 1676 ई. को जुम्मे की नमाज पढ़ने के बाद नाव पर सवार होते समय एक सिक्ख द्वारा औरंगज़ेब की तरफ दो ईंटें फेंककर मारी गई।
269. प्रिंसीपल सतिबीर सिंह ने श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत की तुलना किससे की गई है?
- फीनिक्स नामक पक्षी के साथ, जो अपने अंतिम समय में तिनका-तिनका इकट्ठा करके उसकी आग में खुद को जला देता है और इसकी राख में से निकले अंडे में से फीनिक्स जैसा ही पक्षी पैदा होता है। बिल्कुल इस तरह ही श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत में से उनके जैसा ही निडर और दीन-दुखियों का रक्षक खालसा पैदा हुआ।
270. 'तेग बहादर सिमरिअै घर नउ निधि आवै धाइ सभ थाई होइ सहाइ' वाली पंक्तियां किस रचना में से हैं और इसके रचनाकार कौन है?
- श्री दशम ग्रंथ साहिब में दर्ज 'चंडी दी वार' के पहले छंद से।
रचनाकार - श्री गुरु गोबिंद सिंह जी।

271. ‘प्रगट भये गुर तेग बहादुर, सगल सृष्टि पै ढापी चादर’ वाली पंक्ति में श्री गुरु तेग बहादर जी को सृष्टि की चादर किस कवि ने कहा है और यह पंक्ति किस ग्रंथ में से है?
- श्री गुरु तेग बहादर जी को ‘सृष्टि की चादर’ कवि सैनापति ने कहा है और यह पंक्ति ‘श्री गुर सोभा’ नामक ग्रंथ में से है।
272. भाई नंद लाल जी ने श्री गुरु तेग बहादर जी की प्रशंसा किस प्रकार की है?
- अपनी रचना गंजनामा में भाई नंद लाल जी लिखते हैं कि सत्य की पवित्र किरणें श्री गुरु तेग बहादर जी की उपस्थिति के कारण ही रोशन हैं। दोनों जहान उनकी मेहर बरिशश से रोशन हैं। (अनवारि हक्क अज वजूदि पाकिश रौशन हर दो आलम जि फैजि फ़ज़लश रोशन //)

भाग दूसरा:

श्री गुरु तेग बहादर जी: बाणी और विचारधारा

273. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी की कितनी बाणी दर्ज हैं?

➤ 59 शब्द और 57 सलोक (क्लोक)।

274. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी किसने और कहाँ

दर्ज की?

- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी सिक्ख धर्म के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने तलवंडी साबो (ज़िला बठिंडा, पंजाब) नामक स्थान पर दर्ज की ।
275. श्री गुरु तेग बहादर जी ने कितने रागों में बाणी का उच्चारण किया?
- 15 रागों में ।
276. श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी किस भाषा में उच्चारण की है?
- मुख्यतः ब्रज भाषा और कुछ हद तक सधुककड़ी भाषा ।
277. नौवें पातशाह की बाणी में दुपदे (दो पदों वाला छंद) और तिपदे (तीन पदों वाला छंद) की गिनती कितनी है ।
- दुपदे- 38, तिपदे- 21
278. श्री गुरु तेग बहादर जी की कौन-सी बाणी का पाठ, अखंड पाठ के भोग के समय पाठी सिंघों द्वारा वैरागमई लय में किया जाता है?
- ‘सलोक वारां ते वधीक’ सिरलेख अधीन दर्ज ‘सलोक महला ८ (9)’ के 57 सलोकों (श्लोकों) का ।

279. 'सलोक महला ९' के सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के किस अंग (पृष्ठ) से लेकर किस अंग (पृष्ठ) तक मौजूद हैं?

➤ अंग (पृष्ठ संख्या) 1426 से अंग (पृष्ठ संख्या) 1429 तक।

280. श्री गुरु तेग बहादर जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में कौन-सा नया राग शामिल किया? इस राग में गुरु साहिब के कितने शब्द हैं?

➤ श्री गुरु तेग बहादर जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में 'जैजावंती' नामक नया राग शामिल किया। इस राग में गुरु साहिब के 4 शब्द हैं।

281. श्री गुरु तेग बहादर जी के सबसे अधिक शब्द किस राग में हैं?

➤ सोरठि राग में, 12 शब्द।

282. नौवें पातशाह के शब्दों की सबसे कम गिनती किस राग में है?

➤ आसा, बिहागड़ा और टोड़ी राग में, प्रत्येक राग में 1-1 शब्द।

283. श्री गुरु ग्रंथ साहिब के किन रागों में गुरु जी के 4-4 शब्द हैं?

➤ धनासरी, सारंग और जैजावंती रागों में।

284. श्री गुरु तेग बहादर जी के 3-3 शब्द किन रागों में हैं?

➤ देवगंधारी, जैतसरी, तिलंग, बिलावल, रामकली और मारु राग में।

285. गऊङ्गी और बसंत राग में गुरु जी के कितने शब्द हैं?

➤ राग गऊङ्गी- 9 शब्द

राग बसंत- 5 शब्द। (4 शब्द राग बसंत+ 1 शब्द राग बसंत हिंडोल)

286. श्री गुरु तेग बहादर जी की सम्पूर्ण बाणी में मानव को क्या संदेश प्रदान किया गया है?

➤ नाशवान संसार की माया का मोह त्याग कर, मनुष्य जन्म सफल करने के लिए अकाल पुरख (परमात्मा) का नाम सिमरन करने का संदेश।

287. श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी में से मुख्य रूप से कौन-सी प्रवृत्तियाँ उभर कर सामने आती हैं?

➤ वैराग्य भावना और भक्ति भावना।

288. गुरु साहिब की बाणी में दृष्टांत रूप में कौन-कौन से पौराणिक पात्रों के नाम आए हैं?

➤ पांचाली (द्रौपदी), अजामल, गनिका (गनका), सुदामा, ध्रु (भगत), गज (हाथी), नारद आदि।

289. श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में अकाल पुरख (परमात्मा) के लिए कौन-कौन से गुणात्मक और कृतम नामों का प्रयोग किया है?

- हरि, राम, नारायण, गोविंद, भगवंत, रघुनाथ, माधउ (माधौ, माधव) आदि ।
290. अकाल पुरख (परमात्मा) के कौन-कौन से गुणों का गुरु साहिब ने वर्णन किया है?
- अकाल पुरख (परमात्मा) भक्तों का रक्षक, दयालु, पापीयों का उद्धार करने वाला, गरीबों का मित्र और भय-दुखों का नाश करने वाला अनाथों का नाथ है ।
291. गुरु साहिब ने अकाल पुरख (परमात्मा) का स्वरूप किस प्रकार व्यक्त किया है?
- गुरु साहिब के अनुसार उस परमात्मा का कोई भी भेद नहीं पा सकता । बड़े-बड़े योगी, जती, तपी और ज्ञानी परमात्मा का भेद पाने की कोशिश करते-करते थक-हार गए हैं ।
292. श्री गुरु तेग बहादर जी द्वारा अकाल पुरख (परमात्मा) के सामर्थ्य को बिहागड़ा राग में किस प्रकार प्रकट किया गया है?
- अकाल पुरख थोड़े ही समय में रंक को राजा और राजा को रंक बना देता है। वह खाली को भर देता है और भरे हुए को खाली कर देता है। वह अनेक रूपों में मौजूद होता हुआ भी सबसे भिन्न है ।
293. श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार परमात्मा को वर्णों-जंगलों में ढूँढ़ने की

आवश्यकता क्यों नहीं है?

- परमात्मा को वनों-जंगलों में ढूँढने की आवश्यकता नहीं क्योंकि परमात्मा का निवास मनुष्य के भीतर (अंदर) ही है।

294. परमात्मा मनुष्य के भीतर (अंदर) किस प्रकार मौजूद है?

- परमात्मा मनुष्य के भीतर (अंदर) इस प्रकार मौजूद है जैसे फूलों में खुशबू और शीशे में परछाई मौजूद होते हैं।

295. परमात्मा के इस तरह के स्वरूप की समझ किस प्रकार आती है?

- पूर्ण गुरु के द्वारा बँहिशश किए गए ज्ञान के माध्यम से।

296. गुरु उपदेश की महानता को गुरु साहिब ने कैसे दर्शाया है?

- गुरु के उपदेश को मन में धारण किए बिना बाहरी योग (धार्मिक कर्मकांड) और सिर मुँडवा कर भगवें वस्त्र धारण करने आदि का कोई अर्थ नहीं है।

297. जगत की रचना को गुरु साहिब ने किस रूप में प्रस्तुत किया है?

- बादलों की छाया, धुएँ के पहाड़ और पानी के बुलबुलों के क्षणभंगुर (थोड़े समय वाले) अस्तित्व के रूप में।

298. धन-पदार्थ और माया के सुख मनुष्य के लिए किस प्रकार के हैं?

- यह सुख मनुष्य के लिए बालू (रेत) की बनाई हुई दीवार के समान हैं जिनका अस्तित्व बहुत कम समय के लिए होता है।
299. श्री गुरु तेग बहादर जी ने मनुष्य को किस ढंग से परमात्मा के नाम के साथ प्रेम करने के लिए प्रेरित किया है?
- मछली द्वारा पानी को प्रेम करने के ढंग की तरह। मछली का पानी के साथ इस तरह का प्रेम होता है कि वह पानी के बिना थोड़ा समय भी जीवित नहीं रह सकती। मनुष्य को भी इसी प्रकार परमात्मा के नाम को अपने जीवन का आधार बनाना चाहिए।
300. श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार मानव के मन का स्वभाव कैसा है?
- मानव का मन बहुत चंचल होता है जो तृष्णा (कामनाओं/इच्छाओं) के अधीन भटकता रहता है।
301. नौवें पातशाह के अनुसार माया का स्वरूप किस तरह का है?
- माया का बाहरी स्वरूप बहुत ही सुहावना और आकर्षक है, परंतु इसका प्रभाव विषेला होता है।
302. श्री गुरु तेग बहादर जी के सोराठि राग में वर्णित शब्द- 'जो नर दुख मैं दुखु नहीं मानै // ' के अनुसार जीवन मुक्त मनुष्य की अवस्था कैसी होती है?

- जीवन मुक्त मनुष्य के लिए दुखः-सुख, प्रशंसा-निंदा, सोना-मिट्टी, मान-अपमान और खुशी-गमी एक जैसे होते हैं। जीवन मुक्त मनुष्य सम-अवस्था (स्थिर अवस्था) का धारणी हो जाता है।
303. जीवन मुक्त वाली युक्ति की समझ किस मनुष्य को आती है?
- जीवन मुक्त वाली युक्ति की समझ उस मनुष्य को ही आती है जिस मनुष्य पर पूर्ण गुरु की कृपा हो।
304. जीवन मुक्त मनुष्य का परमात्मा के साथ कैसा संबंध बन जाता है?
- जीवन मुक्त मनुष्य परमात्मा के साथ इस प्रकार अभेद (विलीन) हो जाता है जैसे पानी के साथ पानी मिलकर एक रूप हो जाता है।
305. जीवन मुक्त वाली आवस्था के स्वरूप के संबंध में श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या कहा है?
- श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस आवस्था को कठिन खेल का नाम दिया है जिसको कोई गुरमुख (गुरु के उपदेश के अनुसार चलने वाला मनुष्य) ही समझ सकता है।
306. मनुष्य के अन्तिम समय में उसका मददगार कौन होता है?
- परमात्मा का नाम।
307. गुरु साहिब ने परमात्मा के नाम को किस रूप में प्रस्तुत किया है?

- परमात्मा का नाम एक ऐसी चिंतामणी की तरह है जो मनुष्य के हर प्रकार के दुखों और चिंताओं को हमेशा के लिए समाप्त कर देता है।
308. माया के पदार्थों और धन-संपत्ति के मोह में पड़कर मनुष्य का इस जगत के प्रति कैसा दृष्टिकोण हो जाता है?
- मनुष्य इस झूठे जगत को सच्चा जानकर, जगत से प्रेम करने लगता है।
309. सुखों की प्राप्ति की कोशिश करते हुए मनुष्य दुखों में कैसे पड़ जाता है?
- सुखों की प्राप्ति के लिए मनुष्य, विभिन्न स्थानों पर सांसारिक लोगों की खुशामद करता हुआ सुख की जगह पर दुख सहारता है।
310. तृष्णा (कामनाओं/इच्छाओं) के अधीन होकर मनुष्य का स्वभाव कैसा हो जाता है?
- तृष्णा (कामनाओं/इच्छाओं) के अधीन होकर मनुष्य कुत्ते की तरह दर-दर भटकता रहता है और उसे परमात्मा के नाम-सिमरन की सुध-बुध नहीं रहती।
311. थोड़े-थोड़े समय बाद मनुष्य की आयु किस प्रकार गुजर रही है?
- मनुष्य की आयु इस प्रकार गुजर रही है जैसे टूटे हुए घड़े में से पानी रिसता रहता है।

312. परमात्मा का गुणगान न करने वाले मनुष्य को श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या कह कर संबोधन किया कहा?
- परमात्मा का गुणगान न करने वाले मनुष्य को श्री गुरु तेग बहादर जी ने मूर्ख और अज्ञानी कह कर संबोधन किया है।
313. मनुष्य के शरीर के संबंध में श्री गुरु तेग बहादर जी ने अपनी बाणी में क्या कहा है?
- गुरु साहिब ने इस मनुष्य शरीर को मिथ्या और झूठा कहा है। केवल इस शरीर में निवास करने वाला परमात्मा ही सत्य है।
314. तीर्थों पर स्नान करने वाले और व्रत रखने वाले जिन लोगों का अपने मन पर नियंत्रण नहीं, उनके बारे में गुरु जी क्या कहते हैं?
- ऐसे लोगों के सभी धार्मिक कार्य, पानी में पड़े हुए पत्थर के सूखे रह जाने की तरह, निष्फल (किसी फल से रहित/व्यर्थ) होते हैं जिनका कोई लाभ नहीं होता।
315. मनुष्य के अंदर का क्रोध उसे कैसे प्रभावित करता है?
- मनुष्य अपने क्रोध के कारण अपनी सारी सुध-बुध खो देता है।
316. मनुष्य द्वारा लालच के अधीन होकर किए गए कर्मों का क्या परिणाम निकलता है?

- लालच के अधीन होकर किए गए कर्म मनुष्य के लिए बंधन का कारण बनते हैं।
317. मुसीबत के समय जब सारे रिश्तेदार और मित्र, मनुष्य का साथ छोड़ जाए तो मनुष्य को क्या करना चाहिए?
- ऐसे मुसीबत के समय में मनुष्य को परमात्मा का सहारा लेना चाहिए।
(संग सखा सभि तजि गये कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह विपति मैं टेक एक रघुनाथ ॥)
318. मोह-माया के प्रभाव अधीन खोटी बुद्धि के अनुसार चलने वाले मन की तुलना गुरु साहिब ने किस के साथ की है?
- कुत्ते की पूँछ के साथ, जो कभी भी सीधी नहीं होती।
319. श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार माया के भ्रम के अधीन इस जगत की स्थिति कैसी है?
- माया के भ्रम के अधीन संसार, परमात्मा के नाम-सिमरन को छोड़ कर, परिवार और धन-पदार्थों के सुखों में लिप्त हुआ पड़ा है। करोड़ों में कोई विरला गुरमुख ही स्वयं को पहचान पाता है।
320. योग की युक्ति के बारे में धनासरी राग में श्री गुरु तेग बहादर जी का कौन-सा विचार प्राप्त होता है?

- धनासरी राग में योग की युक्ति के बारे में यह विचार प्राप्त होता है कि जिस योगी के हृदय में लोभ, मोह-माया, ममता (आसक्ति) आदि का निवास है, वह योग की युक्ति से बहुत दूर है।
321. यह मनुष्य जन्म किस कारण से व्यर्थ चला जाता है?
- जब मनुष्य अज्ञानता के अधीन परमात्मा का नाम भूलकर विषय-विकारों के रस में लिप्त रहता है और हृदय में निवास कर रहे परमात्मा रूप रत्न का ज्ञान प्राप्त नहीं करता तो उसका जन्म पीरथ चला जाता है।
322. मनुष्य के कार्य किस प्रकार बिगड़ जाते हैं?
- मनुष्य जान बूझकर अपने कार्य बिगड़ लेता है क्योंकि वह पाप करते समय संकोच नहीं करता और ना ही अपना अहंकार दूर करता है।
323. श्री गुरु तेग बहादर जी ने मनुष्य जीवन की कितनी अवस्थाओं का वर्णन किया है?
- तीन अवस्थाएँ- बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था।
324. मनमुख (अपने मन के अधीन चलने वाला) व्यक्ति जीवन की इन तीन अवस्थाओं को किस प्रकार व्यर्थ खो देता है?
- बचपन- अज्ञानता में, युवावस्था- विषय-विकारों में और वृद्धावस्था- खोटी बुद्धि के अधीन ना समझी के कारण।

325. विषय-विकारों की गहरी नींद में से मनुष्य का मन कब जागता है?

- विषय-विकारों की गहरी नींद में से मनुष्य का मन उस समय जागता है जब यमदूतों का डंडा उसके सिर के ऊपर पड़ता है अर्थात् जब अंतिम समय बिल्कुल नजदीक आ जाता है।

326. काम-वासना वाला विकार किस-किस मनुष्य पर अपना प्रभाव डालता है?

- योगियों, जंगमों और संन्यासियों सहित सभी मनुष्यों पर यह अपना प्रभाव डालता है। केवल वही मनुष्य इससे बच पाते हैं जो परमात्मा का नाम-सिमरन करते हैं।

327. संसार के समस्त सुखों को प्रदान करने वाला दाता कौन है?

- केवल एक अकाल पुरख। उसके अलावा कोई दूसरा दाता नहीं है।

328. श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार मानव शरीर कितने तत्वों से बना है?

- पाँच तत्वों से।

329. सृष्टि में किस जगह पर अकाल पुरख (परमात्मा) का निवास है?

- सम्पूर्ण सृष्टि के कण-कण में।

330. श्री गुरु तेग बहादर जी के अनुसार आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण ज्ञानी

मनुष्य का स्वरूप कैसा होता है?

- आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण ज्ञानी मनुष्य परमात्मा के बिना ना ही किसी का भय मानता है और ना ही किसी को भय देता है।
331. मनुष्य को कैसा वैराग्य धारण करना चाहिए?
- विषय-विकारों का परित्याग करके बाहरी वैराग्य के स्थान पर अंदरूनी वैराग्य धारण करना चाहिए।
332. विषय-विकारों का परित्याग करने वाले मनुष्य का समाज को क्या योगदान होता है?
- ऐसा मनुष्य स्वयं भी संसार रूपी भव सागर से पार हो जाता है और दूसरों को भी पार कर देता है।
333. इस संसार में परमात्मा का नाम-सिमरन करने वाले कितने मनुष्य हैं?
- करोड़ों में से कोई एक मनुष्य अर्थात् कि बहुत ही थोड़े।
(कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीत !!)
334. सुखों की सदैव प्राप्ति के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?
- अकाल पुरख (परमात्मा) की शरण लेनी चाहिए।
(जज सुख चाहै सदा सरनि राम की लेह !!)

335. माया के पीछे भागने वाले लोगों को श्री गुरु तेग बहादर जी ने क्या कहा है?

➤ ऐसे लोगों को गुरु जी ने मूर्ख और अज्ञानी कहा है।

(माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥)

336. दिन-रात परमात्मा का नाम-सिमरन करने वाले मनुष्य की अवस्था कैसी बन जाती है?

➤ दिन-रात परमात्मा का नाम-सिमरन करने वाला मनुष्य, उस परमात्मा का ही रूप बन जाता है। ऐसे मनुष्य और परमात्मा में कोई अंतर नहीं रह जाता है।

337. लोभ में फंसे हुए मनुष्य का स्वभाव कैसा बन जाता है?

➤ लोभ के जाल में फंसा हुआ मनुष्य वह कार्य नहीं करता जो उसके किए जाने के योग्य है और जीवन का पूरा समय इस प्रकार व्यर्थ खो देता है।

338. माया के मोह में फंसा हुआ मन, इस मोह में किस प्रकार बंधा रहता है?

➤ माया के मोह में फंसा हुआ मन, इस मोह में इस प्रकार बंधा रहता है जिस प्रकार दीवार के ऊपर छपी हुई तस्वीर का स्वरूप उस दीवार को नहीं छोड़ता और दीवार के साथ ही बंधा रहता है।

339. मनुष्य को अपने शरीर का अहंकार क्यों नहीं करना चाहिए?

- शरीर का अहंकार इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि यह शरीर एक क्षण में नष्ट हो जाता है ।
340. परमात्मा की भक्ति से खाली मनुष्य के शरीर को गुरु साहिब ने कैसा बताया है?
- सुअर और कुत्ते के शरीर के जैसा । (एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥)
341. मनुष्य को किस ढंग से एकाग्र होकर परमात्मा का नाम-सिमरन करना चाहिए?
- मनुष्य को परमात्मा का नाम-सिमरन इस ढंग के साथ एकाग्र होकर करना चाहिए जैसे एक कुत्ता कभी भी अपने मालिक के घर को नहीं छोड़ता ।
342. तीर्थयात्रा, व्रत, दान आदि धार्मिक कर्मकांड करके अहंकार करने का क्या परिणाम निकलता है?
- ऐसा करने से सारे कर्म-धर्म हाथी के स्नान की तरह व्यर्थ चले जाते हैं क्योंकि हाथी नहाने के बाद अपने शरीर के ऊपर मिट्टी डाल लेता है ।
343. वृद्धावस्था में मनुष्य का शरीर कैसा हो जाता है?

- वृद्धावस्था में मनुष्य का सिर कांपने लगता है, पैर लड़खड़ाने लगते हैं और आँखों की रोशनी कम हो जाती है परंतु मन के पीछे चलने वाला मनमुख फिर भी परमात्मा का नाम-सिमरन नहीं करता ।
344. बड़े परिवारों वाले राम और रावण के इस संसार से चले जाने के दृष्टांत के माध्यम से गुरु साहिब ने क्या समझाया है?
- इस दृष्टांत के माध्यम से गुरु साहिब ने जगत की नश्वरता को दर्शाया है कि इस संसार में कुछ भी सदैव कायम रहने वाला नहीं है ।
345. मनुष्य को सांसारिक पदार्थों के खत्म हो जाने पर चिंता क्यों नहीं करनी चाहिए?
- इनकी चिंता इसलिए नहीं करनी चाहिए क्योंकि संसार में कुछ भी सदैव कायम रहने वाला नहीं है ।
346. संसार में जो भी जन्म लेता है या बनता है, उसके संबंध में कौन-सा अटल नियम है?
- संसार में जो कुछ भी पैदा होता है या बनता है, वह एक दिन अवश्य ही खत्म/नष्ट हो जाता है । कुछ भी सदैव कायम रहने वाला नहीं है ।
347. परमात्मा के नाम से विमुख (दूर) होने पर कौन-से बंधन मनुष्य को शक्तिहीन कर देते हैं?

- परमात्मा के नाम से विमुख (दूर) होने पर जब मनुष्य माया के मोह के बंधनों में फँस जाता है तो वह आत्मिक तौर पर शक्तिहीन हो जाता है। ऐसी हालत में मनुष्य को केवल परमात्मा का ही सहारा होता है।

348. आत्मिक रूप से कमज़ोर व्यक्ति की परमात्मा कैसे मदद करता है?

- ऐसा मनुष्य जब परमात्मा का सहारा लेता है तो उसके अंदर माया का प्रतिरोध करने की शक्ति पैदा हो जाती है और माया के बंधन टूट जाते हैं।

349. संसार में किन का अस्तित्व सदैव रहता है?

- (क) परमात्मा का।
 (ख) परमात्मा के नाम का।
 (ग) परमात्मा के साथ जोड़ने वाले गुरु का।
 (घ) परमात्मा से जुड़े हुए मनुष्य (साधु) का।

350. श्री गुरु तेग बहादर जी का कौन सा सलोक (श्लोक), दूसरों को डराकर अत्याचार करने से रोकता है और मनुष्य में निडरता (निर्भयता) की भावना पैदा करता है?

- भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
 कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥

-श्री गुरु ग्रंथ साहिब, अंग (पृष्ठ) 1427

भाग तीसरा:

श्री गुरु तेग बहादर जी से संबंधित प्रमुख स्थानों की
तस्वीरें



गुरुद्वारा गुरु के महल, श्री अमृतसर साहिब

इस पवित्र स्थान पर वैशाख मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1678 विक्रमी (1 अप्रैल, 1621 ई.) को पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब और माता नानकी जी के घर श्री गुरु तेग बहादर जी का प्रकाश (जन्म) हुआ।



1. **गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब, बाबा बकाला (बाएं तरफ)**
(श्री गुरु तेग बहादर जी का गुरांगी प्रासि वाला स्थान)
2. **गुरुद्वारा भौरा साहिब, बाबा बकाला (दाएं तरफ)**
(श्री गुरु तेग बहादर जी का भजन बंदगी वाला स्थान। सिक्ख परम्परा के अनुसार इस स्थान पर गुरु साहिब ने बाबा बकाला निवास के समय अकाल पुरख (परमात्मा) की भजन बंदगी की।)



गुरुद्वारा साहिब पातशाही नौवीं, धमतान साहिब, जिला जींद (हरियाणा)

इस स्थान पर मुगल बादशाह औरंगजेब के हुक्म अनुसार आलम खान रुहेला द्वारा कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष 11, संवत् 1722 विक्रमी (8 नवंबर, 1665 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी की पहली गिरफ्तारी हुई। इस स्थान को गुरु साहिब ने बांगर (हरियाणा) के प्रमुख प्रचार केंद्र के रूप में विकसित किया और भाई रामदेव जी को इस स्थान पर भाई मीहां जी की उपाधि बस्तिशश की। इस पावन स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी की श्री साहिब (कृपाण) सुशोभित है।



गुरुद्वारा गुरु का ताल, आगरा

यह स्थान श्री गुरु तेग बहादर जी की अंतिम गिरफ्तारी से संबंधित है जो गुरु जी की शहादत से पहले हुई। इस स्थान पर मौजूद बाग में गुरु जी ने शहादत से आगरा के नजदीकी गाँव ककरैठा के रहने वाले, हसन अली नामक गरीब मुस्लिम चरवाहे के माध्यम से अपनी गिरफ्तारी दी। सिक्ख परम्परा के अनुसार बजुर्ग गरीब चरवाहे की इच्छा थी कि गुरु साहिब की गिरफ्तारी के लिए रखे गए 500 सोने की मोहरों के इनाम की राशि के माध्यम से उस की गरीबी दूर हो जाए। इस लिए गुरु साहिब ने नाटकीय ढंग के माध्यम से उस बजुर्ग चरवाहे द्वारा अपनी गिरफ्तारी दी।



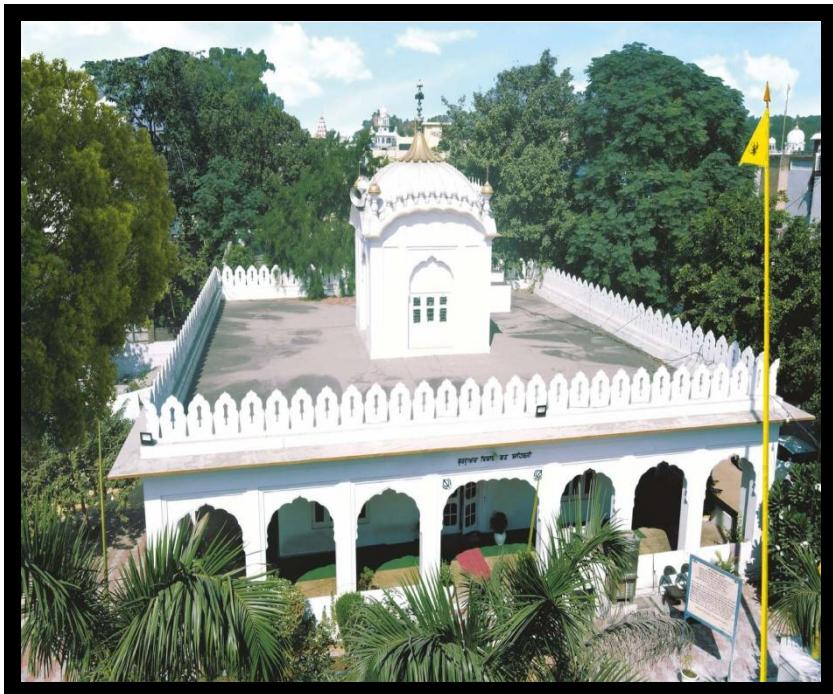
गुरुद्वारा सीस गंज साहिब, चाँदनी चौक, पुरानी दिल्ली

इस स्थान पर मार्गशीर्ष मास, शुक्ल पक्ष 5, संवत् 1732 विक्रमी (11 नवंबर, 1675 ई.) को मुगल बादशाह औरंगजेब के हुकम द्वारा, काजी अब्दुल वहाब वोहरा के फतवे के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर जी को जलालुद्दीन जल्लाद ने शीश (सिर) धड़ से अलग करके शहीद किया। जिस पेड़ के नीचे गुरु साहिब की शहादत हुई, उस स्थान की शनारूत (पहचान) सरदार बघेल सिंह क्रोडसिंधीया ने मार्च, 1783 ई. में दिल्ली जीतने के बाद एक बजुर्ग मुस्लिम माशकी औरत (पानी ढोने वाली) से करवाई जिसके पिता ने गुरु साहिब की शहादत के बाद, पानी के साथ शहीदी वाले स्थान को साफ किया था।



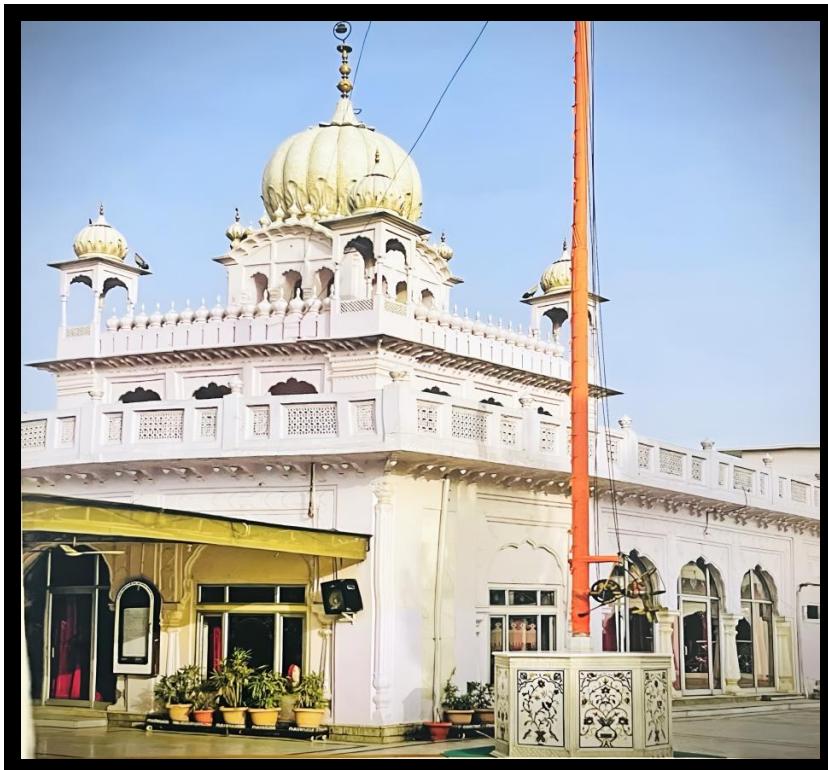
गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब, नई दिल्ली (नजदीक राष्ट्रपति भवन)

भाई लक्खी शाह वणजारा द्वारा इस स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र शहीदी धड़ को अपनी व्यापारिक बैल गाड़ियों द्वारा चाँदनी चौक से अपने घर लाकर, पवित्र धड़ का अंतिम संस्कार किया गया और अंतिम संस्कार करने के बाद मुगल हकूमत की आँखों में धूल झोंकने के लिए इस जगह पर मौजूद अपने घर को आग लगा दी।



गुरुद्वारा बिबान गढ़ साहिब, कीरतपुर साहिब

यह स्थान, चांदनी चौक, दिल्ली में गुरु साहिब की शहादत के बाद उनके पवित्र शीश को दिल्ली से आनंदपुर साहिब लेकर जाने वाले भाई जैता जी और उनके गुरसिक्ख साधियों- भाई नानू जी/ननुया जी और भाई ऊदा जी की सीस यात्रा का अंतिम पड़ाव है। इसी स्थान से श्री गुरु गोबिंद सिंह जी मार्गशीर्ष मास की कृष्णपक्ष 10 (16 नवंबर, 1675 ई.) को श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र शीश को आदरपूर्वक एक पालकी में सुशोभित करके सिख संगत के साथ नगर कीर्तन के रूप में आनंदपुर साहिब लेकर गए।



गुरुद्वारा सीसगंज साहिब, श्री आनंदपुर साहिब

भाई जैता जी (बाबा जीवन सिंह) और उनके गुरसिक्ख साथियों- भाई नानू जी/ननुया जी और भाई ऊदा जी द्वारा श्री गुरु तेग बहादर जी की शहादत के बाद उनका पवित्र सीस चाँदनी चौंक, दिल्ली से श्री आनंदपुर साहिब लेकर आने के बाद इस स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा गुरु मर्यादा के अनुसार, श्री गुरु तेग बहादर जी के पवित्र शीश का अंतिम संस्कार किया गया।

भाग चौथा:

श्री गुरु तेग बहादर जी की दिव्य गुरबाणी की एक संक्षेप
रुहानी झलक

१८ सतिगुर प्रसादि ॥ धनासरी महला ९ ॥

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥२॥
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥३॥१॥

-श्री गुरु ग्रंथ साहिब- अंग (पृष्ठ) 684

अर्थ-

हे भाई ! (परमात्मा को) ढूँढने के लिए जंगलों में क्यों जाता है? परमात्मा सभी में निवास करने वाला है, (फिर भी) हमेशा (माया के प्रभाव से) निर्लिप्त रहता है। वह परमात्मा तेरे साथ ही निवास करता है । १ । रहाउ ।

हे भाई ! जैसे फूल में सुगन्धि रहती है, जैसे शीशे में (शीशा देखने वाले का) प्रतिबिम्ब रहता है, वैसे ही परमात्मा एक-रस समान रूप से सभी के अंदर निवास करता है। (इसलिए, उस परमात्मा को) अपने हृदय में ही ढूँढो । २ ।

हे भाई ! गुरु का उपदेश यह बताता है कि (अपने शरीर के) अंदर (और अपने शरीर से) बाहर (हर जगह) एक परमात्मा को (निवास करता हुआ) समझो । हे दास नानक ! अपने आत्मिक जीवन को पहचाने बिना (मन पर पड़ी हुई) भ्रम की काई (पानी का जाला) दूर नहीं हो सकती (और तब तक सर्व-व्यापक परमात्मा की समझ नहीं आ सकती) । ३ । १ ।

तनु धनु संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥

अर्थ-

हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस (परमात्मा) ने शरीर दिया, धन दिया, जायदाद दी, सुख दिए और सुंदर घर दिए, उस परमात्मा का तू स्मरण क्यों नहीं करता?

सुखु दुखु जिह परसै नहीं लोभु मोहु अभिमानु ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान् ॥१३॥

अर्थ-

हे नानक! कह: हे मन ! सुन, जिस मनुष्य (के हृदय) को सुख-दुख नहीं छू सकता, लोभ मोह अहंकार नहीं पोह सकता (भाव, जो मनुष्य सुख-दुख के समय आत्मिक जीवन से नहीं डोलता, जिस पर लोभ-मोह-अहंकार अपना जोर नहीं डाल सकता) वह मनुष्य (साक्षात्) परमात्मा का रूप है ।

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥

अर्थ:

हे नानक! (कह: हे भाई!) इस कष्ट भरे संसार में परमात्मा का नाम (ही) सारे डर नाश करने वाला है, खोटी मति दूर करने वाला है। जो मनुष्य प्रभु का नाम रात दिन जपता रहता है उसके सारे काम सफल हो जाते हैं।

सोरठि महला ९ ॥

रे नर इह साची जीअ धारि ॥

सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥

बासु भीति बनाई रचि पचि रहत नहीं दिन चारि ॥

तैसे ही इह सुख माझआ के उरझिओ कहा गवार ॥२॥

अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरासि॥

कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥

-श्री गुरु ग्रंथ साहिब- अंग (पृष्ठ) 633

अर्थ-

हे मनुष्य ! अपने दिल में ये बात पक्की तरह टिका ले, (कि) सारा संसार सपने जैसा है, (इसके) नाश होने में देर नहीं लगती । । । रहाउ ।

हे भाई ! (जैसे किसी ने) रेत की दीवार खड़ी करके पोच के तैयार की हो, पर वह दीवार चार दिन भी (टिकी) नहीं रहती । इस माया के सुख भी उस (रेत की दीवार) जैसे ही हैं। हे मूर्ख ! तू इन सुखों में क्यों मर्स्त हो रहा है? । । ।

हे भाई! अभी भी समझ जा (अभी) कुछ नहीं बिगड़ा; और परमात्मा का नाम स्मरण किया कर । हे नानक ! कह: (हे भाई !) मैं तुझे गुरमुखों का यह निजी ख्याल पुकार के सुना रहा हूँ । 2 । 8 ।

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥

अर्थ-

हे नानक! कह: हे मित्र! सुन, जैसे पानी से सदा बुलबुला पैदा होता है और नाश होता रहता है, वैसे ही (परमात्मा ने) जगत की (यह) खेल बनाई हुई।

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥
नानक समिओ रमि गङ्गओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥

अर्थ:

हे नानक! (माया के मोह में) अंधे हो रहे मनुष्य! जो कुछ तूने करना था, वह तूने नहीं किया (सारी उम्र) तू लोभ के फंदे में (ही) फंसा रहा (जिंदगी का सारा) समय (इसी तरह ही) गुजर गया। अब रोता क्यों है? (अब पछताने से क्या फायदा?)।

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥
इन मैं कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥

अर्थ-

हे भाई! (पता नहीं मनुष्य) नाशवान दुनिया का मान क्यों करता रहता है। हे भाई! जगत को सपने (में देखे हुए पदार्थों) की तरह (ही) समझो। हे नानक! मैं तुझे ठीक बता रहा हूँ कि इन (दिखाई देते पदार्थों) में तेरा (असल साथी) कोई भी पदार्थ नहीं है।

गउड़ी महला ९ ॥

मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
 अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥
 जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
 इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥२॥
 रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥
 निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥३॥
 कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥
 अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पटु नही पावै ॥४॥

-श्री गुरु ग्रंथ साहिब- अंग (पृष्ठ) 220

अर्थ-

हे (मेरे) मन ! तू कहां (लोभ आदि में फंस के) पागल हो रहा है? (हे भाई!) दिन रात उम्र घटती रहती है, पर मनुष्य ये बात समझता नहीं और लोभ में फंस के कमजोर आत्मिक जीवन वाला बनता जाता है । १ । रहाउ ।

हे (मेरे) मन ! जो (ये) शरीर, जिसे तू अपना करके समझ रहा है, और घर की सुंदर स्त्री को तू अपनी मान रहा है, इनमें से कोई भी तेरा (सदा निभने वाला साथी) नहीं है, सोच के देख ले, विचार के देख ले । २ ।

हे (मेरे) मन ! जैसे जुआरी जूए में बाजी हारता है, (वैसे ही) तू अपना कीमती मानव जनम हार रहा है । क्योंकि तूने परमात्मा के साथ मिलाप की अवस्था की कद्र नहीं पाई । तू रक्ती भर समय के लिए भी गोबिंद प्रभु के चरणों में नहीं जुड़ता, तू व्यर्थ उम्र गुजार रहा है । ३ ।

हे नानक ! कह: वही मनुष्य सुखी जीवन वाला है जो परमात्मा का नाम (जपता है, जो) परमात्मा के गुण गाता है । बाकी का सारा जहान (जो) माया के मोह में फंसा रहता है (वह सहमा रहता है, वह) उस आत्मिक अवस्था पर नहीं पहुँचता, जहां कोई डर छू नहीं सकता । ४ ।

तीरथ बरत अरु दान करि मन मैं धरै गुमानु ॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥

अर्थ-

हे नानक ! (परमात्मा का भजन छोड़ के मनुष्य) तीर्थ-स्नान करके व्रत रख के, दान-पुण्य कर के (अपने) मन में अहंकार करता है (कि मैं धर्मी बन गया हूँ, पर) उसके (ये सारे किए हुए कर्म इस प्रकार) व्यर्थ (चले जाते हैं) जैसे हाथी का (किया हुआ) स्नान ।

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नहीं सुपने जिउ संसारु ॥५०॥

अर्थ:

हे नानक! कह: (हे भाई! श्री) राम (चंद्र) कूच कर गए, रावण भी चल बसा जिसको बड़े परिवार वाला कहा जाता है। (यहाँ) कोई भी सदा कायम रहने वाला पदार्थ नहीं है। (यह) जगत सपने जैसा (ही) है।

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह बिपति मैं टेक एक रघुनाथ ॥५५॥

अर्थ-

हे नानक ! कह: (जब अंत के समय) सारे संगी-साथी छोड़ जाते हैं, जब कोई भी साथ नहीं निभा सकता, उस (अकेलेपन की) मुसीबत के समय सिर्फ परमात्मा का ही सहारा होता है (सो, हे भाई ! सदा परमात्मा का नाम सिमरन किया करो)।

सहायक पुस्तक सूची/संदर्भ ग्रंथावली

पंजाबी पुस्तकें:

- कान्ह सिंह नाभा (भाई), गुरुशब्द रतनाकर महान कोश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, 2010.
- गुर बिलास पातशाही-६, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1997.
- गुरु तेग बहादर: जीवन, संदेश ते शहादत, तारन सिंह, डॉ. (संपा.), पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1995.
- जग्गी, रतन सिंह (डॉ.), गुरु ग्रंथ विश्वकोश, भाग पहला और दूसरा, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2002.
- _____, सिक्ख पंथ विश्वकोश, भाग पहला से भाग चौथा, ग्रेसियस बुक्स, पटियाला, 2014.
- तारा सिंह नरेच्चम (पंडित), गुरु तीर्थ संग्रह, श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा, कनखल, 1975.
- तारन सिंह (डॉ.), गुरु तेग बहादर: जीवन अते सिकिखआ, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1995.
- तेजा सिंह और गंडा सिंह (डॉ.), सिक्ख इतिहास, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2003.
- धन्ना सिंह चहल पटियालवी, गुरु तीर्थ साइकिल यात्रा, चेतन सिंह (सं.), यूरोपियन पंजाबी साथ, यूके, 2016.
- नानक प्रकाश पत्रिका, तारन सिंह, डॉ. (संपा.), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, जून-दिसम्बर 1975.
- परमवीर सिंह (डॉ.), गुरु तेग बहादर जी जीवन महिमा अते चरन छोह अस्थान, निर्मल आश्रम, ऋषिकेश, 2022.
- प्यारा सिंह पदम, तेग बहादर सिमरिअै, कलम मंदिर, लॉयर मॉल, पटियाला, 1994.
- फौजा सिंह (डॉ.), गुरु तेग बहादर: यात्रा अस्थान, परंपरावां ते याद चिह्न, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1997.
- बंसावलीनामा दसां पातशाहीयां का, प्यारा सिंह पदम (संपा.), सिंह ब्रदरज़,

ਅਮ੃ਤਸਰ, 1997.

- ਬਲਬੀਰ ਸਿੰਹ ਦਿਲ, ਗੁਰ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ: ਜੀਵਨ ਤੇ ਰਚਨਾ, ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 2009.
- ਭਾਈ ਨਂਦ ਲਾਲ ਗ੍ਰਥਾਵਲੀ, ਗੱਡਾ ਸਿੰਹ, ਡਾਂ. (ਸੰਪਾ.), ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 2009.
- ਰਤਨ ਸਿੰਹ ਖੰਗ, ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰ ਪੰਥ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਜੀਤ ਸਿੰਹ ਸ਼ੀਤਲ (ਸੰਪਾ.), ਸ਼ਿਰੋਮਣੀ ਗੁਰੂਦਾਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ ਸ਼੍ਰੀ ਅਮ੃ਤਸਰ, 2000.
- ਮਹਿਸਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼, ਭਾਗ- ਦੂਸਰਾ, ਖੰਡ-2, ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਹ ਲਾਂਬਾ ਔਰ ਖ਼ਜਾਨ ਸਿੰਹ (ਸੰ.), ਭਾਸਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ, 2021.
- ਮਾਲਵਾ ਦੇਸ਼ ਰਟਨ ਦੀ ਸਾਖੀ ਪੋਥੀ, ਖਾਲਸਾ ਸਮਾਚਾਰ, ਸ਼੍ਰੀ ਅਮ੃ਤਸਰ, 1950.
- ਸ਼ਬਦਾਰਥ ਦਸ਼ਮ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਰਣਧੀਰ ਸਿੰਹ, ਭਾਈ (ਸੰਪਾ.), ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 1995.
- ਸ਼ਬਦਾਰਥ ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰ ਪੰਥ ਸਾਹਿਬ (ਭਾਗ 1-4), ਸ਼ਿਰੋਮਣੀ ਗੁਰੂਦਾਰਾ ਪ੍ਰਬੰਧਕ ਕਮੇਟੀ, ਸ਼੍ਰੀ ਅਮ੃ਤਸਰ, 2002.
- ਸੱਲ੍ਹ ਸਿੰਹ ਕੌਂਸ਼ਿਸ਼ (ਭਾਈ), ਗੁਰ ਕੀਧਾਂ ਸਾਖੀਯਾਂ, ਜਾਨੀ ਗਰਜਾ ਸਿੰਹ ਅਤੇ ਪਾਰਾ ਸਿੰਹ ਪਦਮ, ਪ੍ਰੋ., (ਸੰਪਾ.), , ਕਲਮ ਮੰਦਿਰ, ਲਾਯਰ ਮੌਲ, ਪਟਿਆਲਾ, 1986.
- ਸਤਿਬੀਰ ਸਿੰਹ, ਇਤਿ ਜਿਨ੍ਹੀ ਕਾਰੀ, ਨ੍ਯੂ ਬੁਕ ਕੰਪਨੀ, ਜਲਾਂਧਰ, 2004.
- _____, ਬਡੀ ਕਲ੍ਹੂ ਮਹਿ ਸਾਕਾ, ਦਿਲੀ ਸਿਕਖ ਗੁਰੂਦਾਰਾ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਕਮੇਟੀ, 1975.
- ਸਾਹਿਬ ਸਿੰਹ (ਪ੍ਰੋਫੇਸਰ), ਬਾਣੀ ਮਹਲਾ 9 ਸਟੀਕ, ਸਿੰਹ ਬ੍ਰਦਰਸ਼, ਅਮ੃ਤਸਰ, 2012.
- ਸੁਖਦਾਲ ਸਿੰਹ (ਡਾਂ.) ਗੁਰ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਾਰਗ ਪੰਜਾਬ, ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 1997.
- ਸੰਤੋਖ ਸਿੰਹ (ਭਾਈ), ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰ ਪ੍ਰਤਾਪ ਸੂਰਜ ਗ੍ਰੰਥ (ਰਾਣੀ ਗਿਆਰਹਵੀਂ ਔਰ ਬਾਰਹਵੀਂ), ਵੀਰ ਸਿੰਹ, ਭਾਈ (ਸੰਪਾ.), ਭਾਸਾ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ, ਪਟਿਆਲਾ, 1990.
- ਸੰਦੀਪ ਸਿੰਹ (ਡਾਂ.), ਸ਼੍ਰੀ ਗੁਰ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਦੀ ਅਦੁਤੀ ਸ਼ਹਾਦਤ: ਐਤਿਹਾਸਿਕ ਪਰਿਪੇਖ, ਪਲਿਕੇਸ਼ਨ ਏਂਡ ਖੋਜ ਵਿਭਾਗ, ਹਰਿਯਾਣਾ ਸਿਕਖ ਗੁਰੂਦਾਰਾ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਕਮੇਟੀ, ਕੁਰੂਕਾਖਾਲ, 2024.
- ਹਰਿਬੰਸ ਸਿੰਹ (ਜਾਨੀ), ਬਾਣੀ ਗੁਰ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਜੀ ਸਟੀਕ, ਗੁਰਬਾਣੀ ਸੇਵਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਪਟਿਆਲਾ, 2007.
- ਹੁਕਮਨਾਮੇ, ਗੱਡਾ ਸਿੰਹ, ਡਾਂ. (ਸੰਪਾ.), ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ, ਪਟਿਆਲਾ, 1967.

- श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ विचों श्री गुरु तेग बहादर जी दा जीवन बिरतांत, डॉ. किरपाल सिंह (संपा.) धर्म प्रचार कमेटी (शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी), श्री अमृतसर, 2017.
- श्री गुर सोभा, गंडा सिंह, डॉ. (संपा.), पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1980.
- ज्ञान सिंह (ज्ञानी), पंथ प्रकाश, भाषा विभाग, पंजाब, 1987.
- _____, गुरुधाम संग्रह, केंद्रीय सिंह सभा अकैडमी, चंडीगढ़, 1997.
- _____, तवारीख गुरु खालसा, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, 1970.

English Books:

- Fauja Singh and Gurbachan Singh Talib, *Guru Teg Bahadur Martyr and Teacher*, Publication Bureau, Punjabi Uni. Patiala, 1992.
- Ishwari Prasad, *A Short History of Muslim Rule in India*, The Indian Press Limited, Allahabad, 1931 AD.
- *Maásir-i-Âlamgiri*, Sir Jadunath Sarkar (Translator), Royal Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1947 AD.
- Max Arthur Macauliffe, *Life of Guru Tegh Bhadur*, Language Department, Punjab, 1997.
- Mir Gholam Hussain Khan, *Siyar-ul-Mutakhreen*, Collected and Revised by John Briggs, Orientel Translation fund of Great Britain and Ireland, London, 1831 AD.
- Raja Sir Daljeet Singh, *Guru Tegh Bahadur*, Language Department, Punjab, 2022.
- Ranbir Singh, *Guru Tegh Bahadur: Divine Poet, Saviour & Martyr*, Chief Khalsa Diwan, Amritsar, 1975.
- Stanley Lane-Poole, *Rulers of India: Aurangzib*, Printed at the Clarendon Press, Oxford University, 1893 AD.
- Talib, Gurbachan Singh, *Guru Tegh Bahadur: Background and the Supreme sacrifice*, Publication Bureau, Punjabi University Patiala, 1999.



ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਸਿਮਰਿਐ ਘਰ ਨਤ ਨਿਧਿ ਆਵੈ ਧਾਇ ਸਮ ਥਾਈ ਹੋਇ ਸਹਾਇ ॥

-ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਹ ਜੀ
ਚਾਦਰ ਮੇਂ ਹਿੰਦੁਵਾਨ ਕੀ ਬਾਦਰ ਅਨਨਦ ਉਦੋਤਿ । ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਗੁਰ ਨਮੋ ਸਿਮਰੇ ਹਾਦਰ ਹੋਤਿ ।
-ਮਹਾਕਵਿ ਮਾਈ ਸਂਤੋਖ ਸਿੰਹ

ਜਗ ਹਿੰਦੁ ਧਰਮ ਕਹਾਂ ਰਹਿਤੋ,
ਅਰ ਤਗ ਤਿਲਕ ਨ ਦੇਖਨ ਪਾਤੇ ।
ਤੀਰਥ ਦੇਵ ਸਥਾਨ ਪੁਰਾਣ,
ਸਮੀਨ ਨਿਗਮਾਗਮ ਮੀਂ ਤਠਿ ਜਾਤੇ ।
ਬਾਂਗ ਨਿਵਾਜ਼ ਕਤੇਬ ਕੁਰਾਨ,
ਮਸੀਤ ਯਹੀ ਸਥ ਹੀ ਜਗ ਛਾਤੇ ।
ਗੁਰੂ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ਹਿੰਦੁਹਿ ਚਾਦਰ ,
ਕਾਦਰ ਜੋ ਨ ਧਰਾ ਪ੍ਰਗਟਾਤੇ ॥੧੧॥

-ਜਾਨੀ ਜਾਨ ਸਿੰਹ

ਪ੍ਰਗਟ ਮਾਂ ਗੁਰ ਤੇਗ ਬਹਾਦਰ ।
ਸਗਲ ਸ੍ਰਸਟਿ ਪੈ ਟਾਪੀ ਚਾਦਰ ।
ਕਰਮ ਧਰਮ ਕੀ ਜਿਨਿ ਪਤਿ ਰਾਖੀ ।
ਅਟਲ ਕਰੀ ਕਲਜੁਗ ਮੈਂ ਸਾਖੀ ।
ਸਗਲ ਸ੍ਰਸਟਿ ਜਾ ਕਾ ਜਸ ਮਥੋ ।
ਜਿਹ ਤੇ ਸਰਬ ਧਰਮ ਬੱਚਧੋ ।
ਤੀਨ ਲੋਕ ਮੈਂ ਜੈ ਜੈ ਮੰਈ ।
ਸਤਿਗੁਰ ਪੈਜ ਰਾਖਿ ਇਸ ਲੰਈ ।
ਤਿਲਕ ਜਨੇਝ ਅਰ ਧਰਮਸਾਲਾ ।
ਅਟਲ ਕਰੀ ਗੁਰ ਮਾਂ ਦਿਆਲਾ ।
ਧਰਮ ਹੇਤਿ ਪ੍ਰਮ ਪੁਰਹਿ ਸਿਧਾਏ ।
ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਹ ਕਹਿਲਾਏ ।

-ਕਵਿ ਸੈਨਾਪਤਿ



ISBN 978-81-983083-3-7



ਮੇਟਾ 110/-